बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

दिसंबर, 1987

रु. 2.50

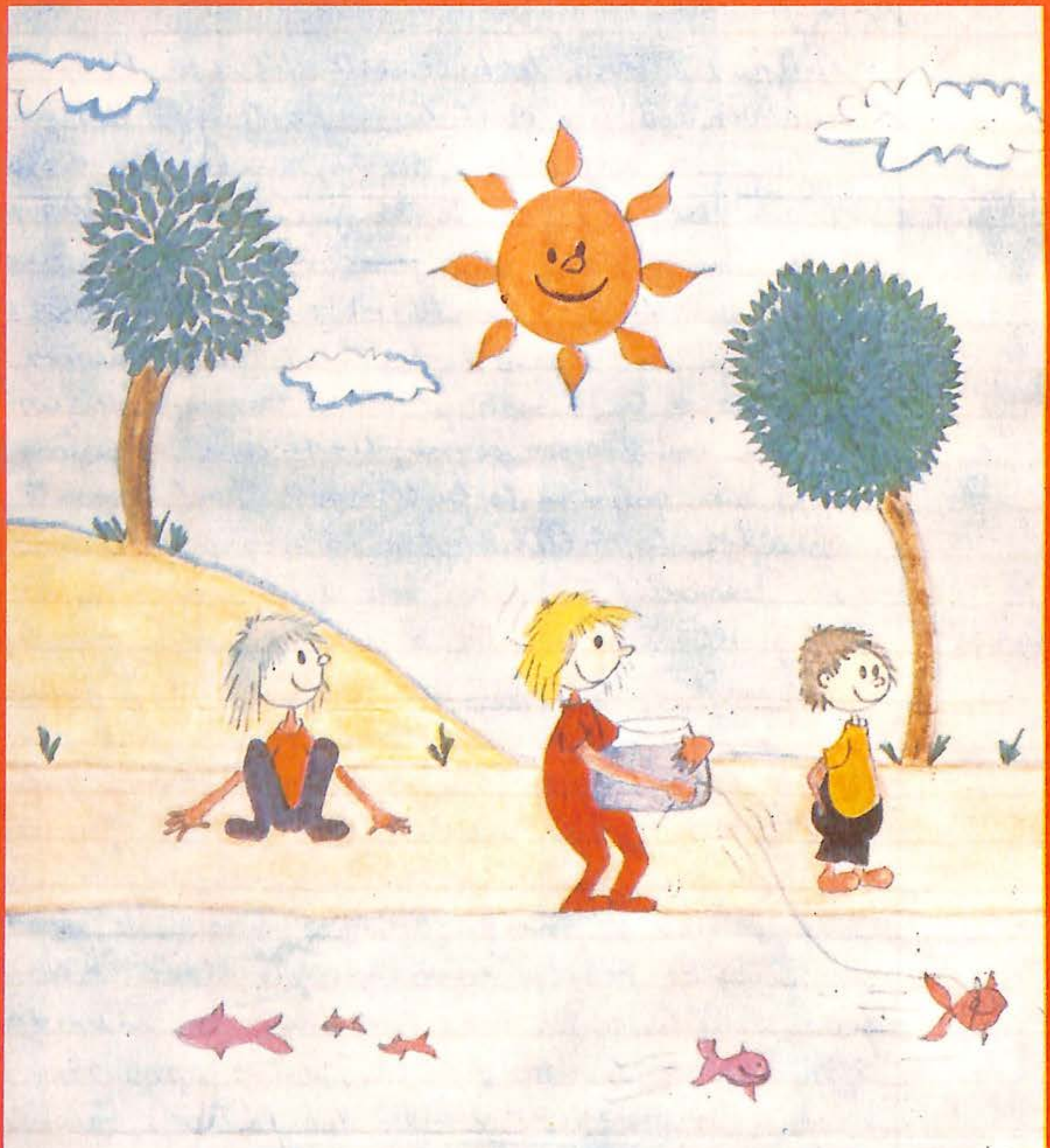

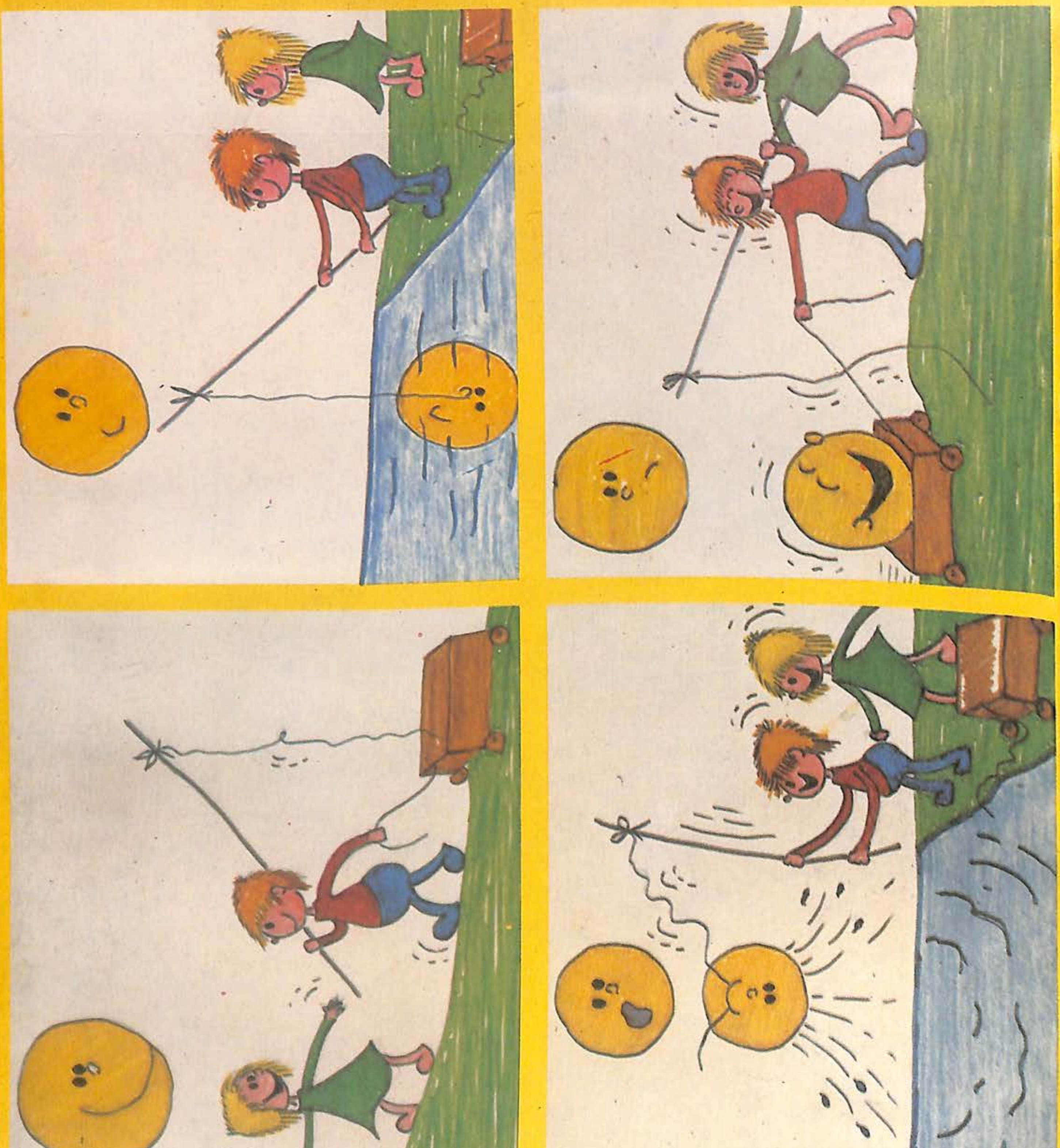

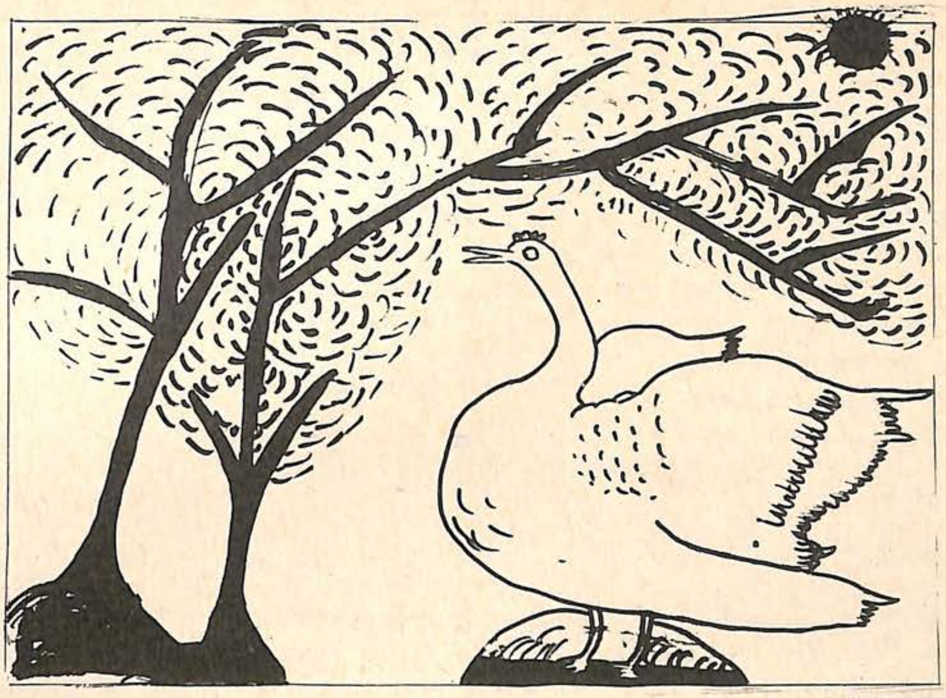

प्रफुल्ल इंगले, छिंदवाड़ा

इस अंक में

पाठक लिखते हैं	2
कविता : आई सर्दी	3
सवालीराम	6
नाटक : पढ़ाई जारी है	7
सूखा पड़ रहा है	10
माथा पच्ची	14
बंदी बाप के चित्र	17
आखिर 'अधिकार' क्या है?	23
अपनी प्रयोगशाला	28
कहानी : लोग उड़ेंगे	29
मेरा पन्ना	35
कविताएं	36
मेरा पन्ना	38
कहानी, नाक की	39

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 3 अंक 6 दिसंबर, 1987

संपादक:
विनोद रायना
संपादक मंडल:
राजेश उत्साही, हरि जोशी, रेक्स
कला:
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा
छमाही: 15 रुपए
वार्षिक: 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता:
एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कालोनी
भोपाल-462 016 (म.प्र.)

आवरण परिचय

इस अंक का आवरण व अन्य सभी रंगीन चित्र अर्जेंटीना वासी युवां कारलोस ने जेल से अपने बेटे पेट्रीशियों के लिए बनाए हैं। (पढ़ो पृष्ठ 17)

सभी चित्र '**एमनेस्टी इंटरनेशनल**' के सौजन्य से प्रकाशित किए जा रहे हैं।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

समावेश अंक मिला। घर में छीना-झपटी मच गई। हर कोई पहले पढ़ना चाहता था। अंत में सामूहिक रुप से पठन हुआ। सारी सामग्री पसंद आई। नुक्कड़ नाटक, समूह कविता, खीरा खाऊं और दो भाई की कथा, फरहान भाई से बातचीत, समावेश टाइम्स, जलेबी, गुड्डू की कल्पना, अपनी विद्युत मोटर तथा सभी चित्र खूब पसंद किए गए। अगस्त अंक में 'एटम बम कभी नहीं' तथा 'स्टारवार' काफी अच्छा लगा। आश्चर्य लोक में एलिस की समापन किश्त पढ़कर हरेक सदस्य के चेहरे पर संतोष की झलक दिखाई दी। घर के समस्त सदस्यों ने यहां तक कि बड़े-बूढ़ों ने भी इस धारावाहिक को खूब पसंद किया। आगामी किसी अंक से इस प्रकार का कोई रोचक धारावाहिक पुनः प्रारम्भ करें।

□ **चकमक पाठक मंच घरघोड़ा, रायगढ़**

हमें आश्चर्यलोक में एलिस धारावाहिक अच्छा लगा।

□ **करणसिंह नायक राज़, छिंदवाड़ा**

अगस्त अंक में चप्पल की गुड़िया, आम की गुठली के साधु बाबा और कहानी सहमा हुआ कल बहुत अच्छी लगी।

□ **सौरभ व्यास, झाबुआ**

एक नाराज़ पाठक लिखते हैं....

संपादक जी,

नमस्कार

मैंने चकमक को अपनी कला का स्तंभ मानकर एक चित्र भेजा था। परंतु उस चित्र का प्रकाशन न होने का समाचार आपने मुझे दे दिया था। परंतु मुझे विश्वास है कि आप मेरे बड़े भाई साहब हैं। और अपने इस छोटे भाई को नाराज नहीं करेंगे। इसी बात को ध्यान में रखते हुए कुछ चुटकुले भेज रहा हूं। अगर इन चुटकुलों का प्रकाशन हो गया तो आप मेरे बड़े भाई साहब होने के रिश्ते से मेरे तक उस चकमक को अवश्य पहुंचाओगे। अगर आपने मेरे चुटकुलों का प्रकाशन नहीं किया तो मैं नाराज़ हो जाऊंगा। अगर आपने मेरे चुटकुलों का प्रकाशन तो कर दिया, मगर एक चकमक की प्रति मुझे नहीं दी या कोई सूचना नहीं दी तो मैं हमेशा के लिए लिखना छोड़ दूंगा। जहां तक कि आपने कोर्स की लिखाई तक नहीं करूंगा और आप की खातिर सर से पिटता रहूंगा। आशा है आप मेरे चुटकुले जरूर प्रकाशित करेंगे।

चुटकुले

एक पति की पत्नी से लड़ाई हो जाती है। पति को सुबह पांच बजे की गाड़ी से जाना होता है। पति एक पत्र पत्नी को लिखकर दे देता है कि मुझे सुबह पांच बजे उठा देना।

जब पति सुबह नौ बजे सोकर उठता है, तो वह अपने आस पास देखता है, कि एक पत्र डला है जिस पर कि लिखा है पांच बज गए हैं, उठ जाइए।

• • •

पुत्रः क्यों पिताजी क्या पापा अधिक होशियार होते हैं?
पिताः क्यों नहीं?
पुत्रः तो पापा भाप के इंजन की खोज किसने की?
पिताः जेम्सवॉट ने!
पुत्रः अगर पापा होशियार होते तो भाप के इंजन की खोज जेम्सवॉट के पापा ने की होती?

• • •

छोटी मीनू पापा को फिनाइल दे रही थी।
मीनूः पापा जी यह क्या है?
पिताः (डर से कि कहीं चख न ले) बेटी जहर है जहर!
मांः (अंदर से) बेटी क्या कर रही हो?
मीनूः मैं पापा को जहर दे रही हूं।

□ **अनुराग केशव दुबे**
गाडरवारा

(उम्मीद है कि अब आपकी नाराज़ी दूर हो गई होगी! —सं.)

आई सर्दी

वर्षा गई शरद रितु आई
शीतल हवा चली सुखदाई
पेड़ धुले हैं, हवा धुली है
खुशबू इसमें घुली-मिली है

हरसिंगार में कलियां आईं
छिटकी डाल-डाल पर छाई
कभी रात में फूल खिले जो
बड़े सवेरे झर झर जाते

जाड़े की अगवानी करने
खुशबू अपनी हैं बिखराते
नारंगी रंग की डंडी पर
श्वेत पंखुड़ी सुंदर लगती

ओस टपकने लगी रात को
सुबह फूल पत्ती पर दिखती
छोटे छोटे मोती जैसी
सब चीजों पर बिखरी रहती

ओस नहाई हरी दूब भी
ठंडी ठंडी अच्छी लगती
निर्मल नीले आसमान पर
जुही फूल से छिटके तारे

नीली रेशम साड़ी पर ज्यों
टंके हुए अनगिनत सितारे
चंदा चांदी की परात सा
आसमान में चमका करता

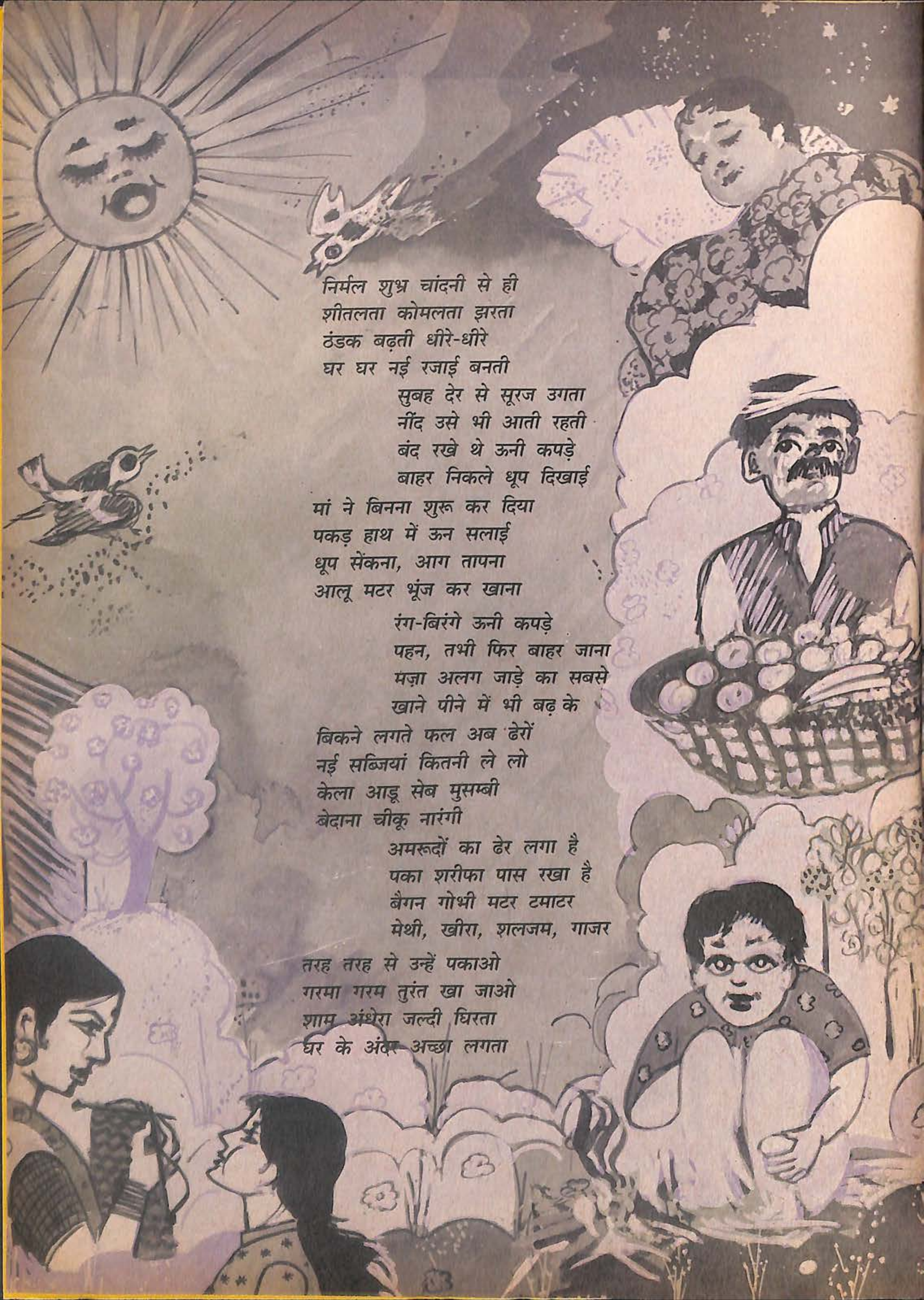

निर्मल शुभ्र चांदनी से ही
शीतलता कोमलता झरता
ठंडक बढ़ती धीरे-धीरे
घर घर नई रजाई बनती

सुबह देर से सूरज उगता
नींद उसे भी आती रहती
बंद रखे थे ऊनी कपड़े
बाहर निकले धूप दिखाई

मां ने बिनना शुरू कर दिया
पकड़ हाथ में ऊन सलाई
धूप सेंकना, आग तापना
आलू मटर भूंज कर खाना

रंग-बिरंगे ऊनी कपड़े
पहन, तभी फिर बाहर जाना
मज़ा अलग जाड़े का सबसे
खाने पीने में भी बढ़ के

बिकने लगते फल अब ढेरों
नई सब्जियां कितनी ले लो
केला आडू सेब मुसम्बी
बेदाना चीकू नारंगी

अमरूदों का ढेर लगा है
पका शरीफा पास रखा है
बैगन गोभी मटर टमाटर
मेथी, खीरा, शलजम, गाजर

तरह तरह से उन्हें पकाओ
गरमा गरम तुरंत खा जाओ
शाम अंधेरा जल्दी घिरता
घर के अंदर अच्छा लगता

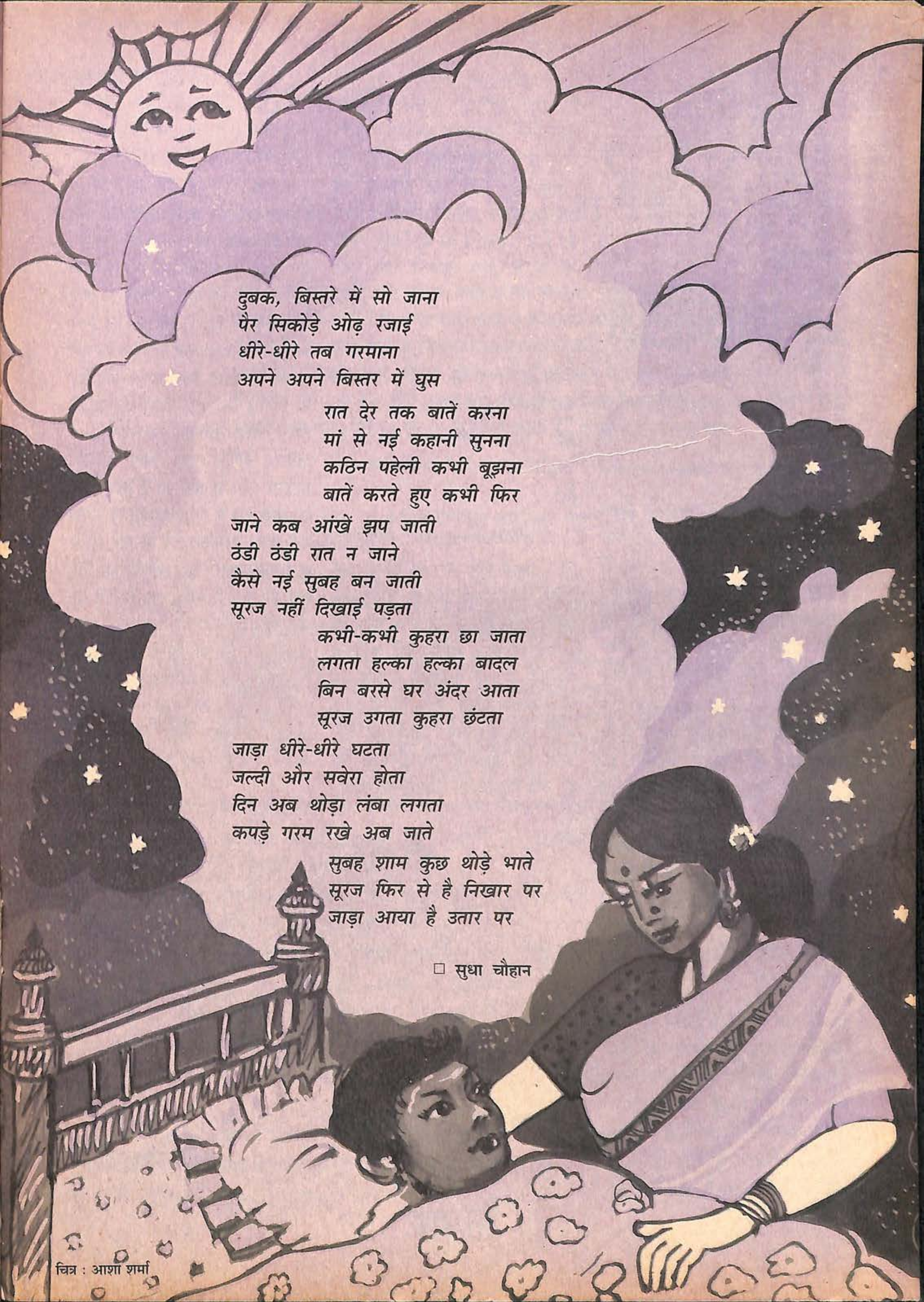

दुबक, बिस्तरे में सो जाना
पैर सिकोड़े ओढ़ रजाई
धीरे-धीरे तब गरमाना
अपने अपने बिस्तर में घुस

रात देर तक बातें करना
मां से नई कहानी सुनना
कठिन पहेली कभी बूझना
बातें करते हुए कभी फिर

जाने कब आंखें झप जाती
ठंडी ठंडी रात न जाने
कैसे नई सुबह बन जाती
सूरज नहीं दिखाई पड़ता

कभी-कभी कुहरा छा जाता
लगता हल्का हल्का बादल
बिन बरसे घर अंदर आता
सूरज उगता कुहरा छंटता

जाड़ा धीरे-धीरे घटता
जल्दी और सवेरा होता
दिन अब थोड़ा लंबा लगता
कपड़े गरम रखे अब जाते

सुबह शाम कुछ थोड़े भाते
सूरज फिर से है निखार पर
जाड़ा आया है उतार पर

□ सुधा चौहान

चित्र : आशा शर्मा

सवालीराम

■ कांच का आविष्कार कैसे हुआ?

झावेन्द्र कुमार ध्रुव, बलौदा बाजार, रायपुर

□ यह कहना असंभव है कि सबसे पहले कांच का आविष्कार किसने, कब और कहां किया। मनुष्य प्राचीन काल से ही कांच का प्रयोग करता आ रहा है। पुरातत्ववेत्ताओं को खुदाई के दौरान पता चला है कि 5000 वर्ष पहले भी कांच का दैनिक रुप से प्रयोग हुआ करता था।

करीब 1800 वर्ष पूर्व एक इतिहासकार द्वारा लिखी गई कांच के आविष्कार की कहानी प्रचलित है। कहानी के अनुसार एक फोएनिशियन व्यापारी अशुद्ध सोडा जहाज़ में लादकर ले जा रहा था। एक रात समुद्र के किनारे बालू तट पर रुककर यात्रियों ने अशुद्ध सोडे के ढेलों से चूल्हा बनाकर आग जलाई। कहते हैं आग की गर्मी से सोडा गलकर बालू में मिल गया और उससे कांच बन गया।

इस कहानी में कितनी सच्चाई है यह पता करना मुश्किल है। पर इससे इतना अवश्य पता चलता है कि कांच का आविष्कार किसी प्रयोगशाला में न होकर रोजमर्रा की एक घटना में हो गया था। यह बात तो निश्चित है कि तब और अभी के कांच में बहुत फर्क है।

कांच के निर्माण के लिए सिलिका, सोडियम ऑक्साइड और कैल्शियम ऑक्साइड का एक विशेष अनुपात में मिश्रण किया जाता है। इस मिश्रण को अच्छी तरह पीसकर ऊंचे तापमान वाली भट्टियों में डाला जाता है। फिर गर्म कांच को छड़ों और चादरों के रुप में ढाला जाता है। इन छड़ों, चादरों को आवश्यकतानुसार पिघलाकर तरह-तरह की वस्तुएं बनाने के लिए सांचों में डाला जा सकता है। रंगीन कांच बनाने के लिए इसके सामान्य मिश्रण में कुछ विशेष पदार्थ मिलाए जाते हैं।

■ तोता क्यों बोल पाता है, जबकि अन्य पक्षी नहीं बोल पाते हैं?

रामेश्वर मोहनलाल चौधरी, नेवरी,देवास

□ किसी भी पक्षी की अपनी एक विशेष ध्वनि/बोली होती है, यह उसका जातिगत गुण है। एक जाति के सब पक्षी हमेशा एक सा ही बोलेंगे चाहे वे जंगल में रहने वाले हों या पिंजरे में पाले गए हों। उनकी बोली में परिवर्तन लाना संभव नहीं है। अपनी बोली का अर्थ अन्य पक्षी जातिगत गुण से समझ लेते हैं, उन्हें सिखाने की जरूरत नहीं होती। पक्षियों की इस ध्वनि को भाषा नहीं कहा जा सकता। हरेक पक्षी का नवजात शिशु जन्म से ही इन ध्वनियों का प्रयोग करने लगता है।

हां, ऐसे कई पक्षी ज़रूर हैं जो दूसरे पक्षियों की आवाज निकालने और गाने की नकल करने में माहिर होते हैं। ऐसे कितने पक्षियों के बारे में तुम जानते हो? आदमी की बोली सीखने में तोता और मैना प्रसिद्ध हैं, लेकिन यह तभी बोलने में समर्थ हो पाते हैं जब बचपन से ही इन्हें प्रशिक्षित किया जाए। और ऐसा भी नहीं है कि ये प्रशिक्षण देने पर भी हमारी तरह लगातार बातचीत करने लगेंगे। क्योंकि पक्षी अपने सोचने, महसूस करने या कुछ पाने के लिए शब्दों का क्रम रुप में उपयोग करने में समर्थ नहीं होते। प्रशिक्षण देने के बाद भी ये कुछ खास-खास शब्द बोलना ही सीख पाते हैं। मैना में यह क्षमता होती है कि वह बिना किसी प्रशिक्षण के अन्य पक्षियों के गाने की नकल बड़ी आसानी से निकाल लेती है। नीलकंठ,पहाड़ी मैना आदि पक्षियों को दूसरे पक्षियों की आवाज़ बोलकर औरों को धोखे में डालने में मज़ा आता है। ● ●

चित्रः प्रमोद, सातवीं, होतरिया, धार

खामोश! पढ़ाई जारी है!

पर्दा खुलता है। मंच पर एक पाठशाला का दृश्य है। बेंचों पर छह-सात लड़के-लड़कियां बैठे हैं। ब्लैकबोर्ड के पास कुर्सी पर मास्टरजी उकडूं बैठे ऊंघ रहे हैं। एक बेंच के पास दो छोटे-छोटे पिल्ले बंधे हैं और एक जालीदार पिंजड़े में दो मुर्गियां फुदक रही हैं। पिंजड़े में एक तोता रखा टें-टें चिल्ला रहा है। पीछे एक बैनर लगा है- 'सर्वजंतु पाठशाला। यहां बच्चों तथा पशु-पक्षियों की मुफ्त पढ़ाई होती है!' कक्षा में शोर मच रहा है।

मास्टरजी : **(नींद तोड़कर मेज़ पर छड़ी फटफटाते हुए)** अरे बच्चों और मुर्गियों, चुप रहो!, कुछ पढ़ो-लिखो ! लल्लू sss !

लल्लू : **(उठकर)** जी, मास्टरजी!

मास्टरजी : तुम इन सबमें जरा कम गधे हो ! इधर आओ। यहां खड़े होकर इन सबको मुहावरे और कहावतें पढ़ाओ। शाबाश! **(पुनः जम्हाई लेकर नींद में नाक बजाने लगते हैं।)**

लल्लू : प्यारे बच्चो, मुर्गियो और तोतो ! शांत हो जाओ। जलेबी तुम इस चौथी कक्षा में ही चार साल से डेरा डाले बैठी हो। बताओ, इसका क्या अर्थ होता है- नाच न आए, आंगन टेढ़ा?

जलेबी : मेरी कॉपी में लिखा है। कॉपी कल मुर्गी नकल करने ले गयी और चोंच मारकर नोच डाली। वैसे मैं अर्थ बताती हूं। इसका अर्थ है कि तूने नाच-नाचकर आंगन टेढ़ा कर दिया है। अब नाचना बंद कर और आंगन सीधा कर।

मास्टरजी : **(नींद में)** शाबाश! शाबाश! खूब मन लगाकर पढ़ो।**(नाक फिर बजने लगती है।)**

लल्लू : शाबाश जलेबी, तुम बैठ जाओ। टुनटुनी, अब तू खड़ा हो। बता, नीम हकीम खतरा जान ... इसका क्या मतलब है?

टुनटुनी : **(खड़े होकर)** यह तो बड़ा आसान है। इसका मतलब है कि ए हकीम, तू नीम के पेड़ के नीचे मत बैठ। तेरी जान को खतरा है।

मास्टरजी : **(नींद में छड़ी फटफटाकर)** बहुत अच्छे! ऐसे ही मेहनत से पढ़ो। **(पुनः सो जाते हैं।)**

लल्लू : मुनमुन, तुम बताओ- नेकी कर, कुएं में डाल।

मुनमुन : मुझे कुएं से डर लगता है। नहीं बताऊंगा।

लल्लू : अच्छा घसीटे, तू बता।

घसीटे : इसका मतलब है कि तू ज़बरदस्ती सबके साथ नेकी कर। अगर कोई राज़ी न हो तो उसे कुएं में डाल दे।

लल्लू : शाबाश! बैठ जाओ। तानपुरा, तू उठ!

एक बेहद मोटा थुलथुल लड़का उठ खड़ा होता है।

तानपुरा : पूछो! मैं ज्यादा देर खड़ा नहीं रह सकता।

लल्लू : बताओ—घर की मुर्गी दाल बराबर।

तानपुरा : इसका अर्थ है कि अगर घर में मुर्गी पली हो, तो उसे बराबर दाल खिलाते रहो; नहीं तो अंडा नहीं देगी।

मास्टरजी : **(नींद में)** यह कौन कक्षा में अंडा दे रहा है?

लल्लू : कोई नहीं। आप मज़े में सोते रहिए। तानपूरा, तुम बैठ जाओ। हुड़कचुल्लू, तुम खड़े हो जाओ।

हुड़कचुल्लू : **(हकलाता है)** ऊ ... ऊ ... ऊचो (पूछो)।

लल्लू : बताओ, इसका क्या अर्थ है- जितनी लंबी चादर, उतने पैर पसार।

हुड़कचुल्लू : अ ... अ ... अताता हूं। इसका मतलब है कि जब सब सो जाएं, तो सबकी अ ... अ ... आदरें (चादरें) नाप लो। जिसकी आदर लंबी हो, उसी में घुसकर पैर पसार दो।

लल्लू : शाबाश! अगर चादर छोटी पड़ जाए, तो?

हुड़कचुल्लू : तो क्या? जितने ऐर (पैर) आदर के आहर (बाहर) निकले रहें, उन्हें काटकर दूसरी आदर में रख दो, छुट्टी हुई!

मास्टरजी : **(नींद से चौंककर)** वाह ... वाह ... शाबाश ! चुड़कहुल्लू, मेरा मतलब, हुड़कचुल्लू, ऐसे ही मन लगाकर पढ़ो। **(आंखें मूंद लेते हैं ... नाक बजती है।)**

लल्लू : बस, एक प्रश्न और पूछूंगा। लुधियानासिंह, तुम बताओ।

लुधियाना सिंह : **(खड़े होकर)** पुच्छो जी! अस्सी तय्यार हैं।

लल्लू : बताओ—पांच जनों की लाठी, एक जने का बोझ।

लुधियाना सिंह : लो सुनो! पांच आदमी मिलकर एक आदमी को लाठी मारो। जब बेहोश हो जाए, तो उसका बोझ लाठी पर टांग कर उसके घर पहुंचा दो। होर पुच्छो।

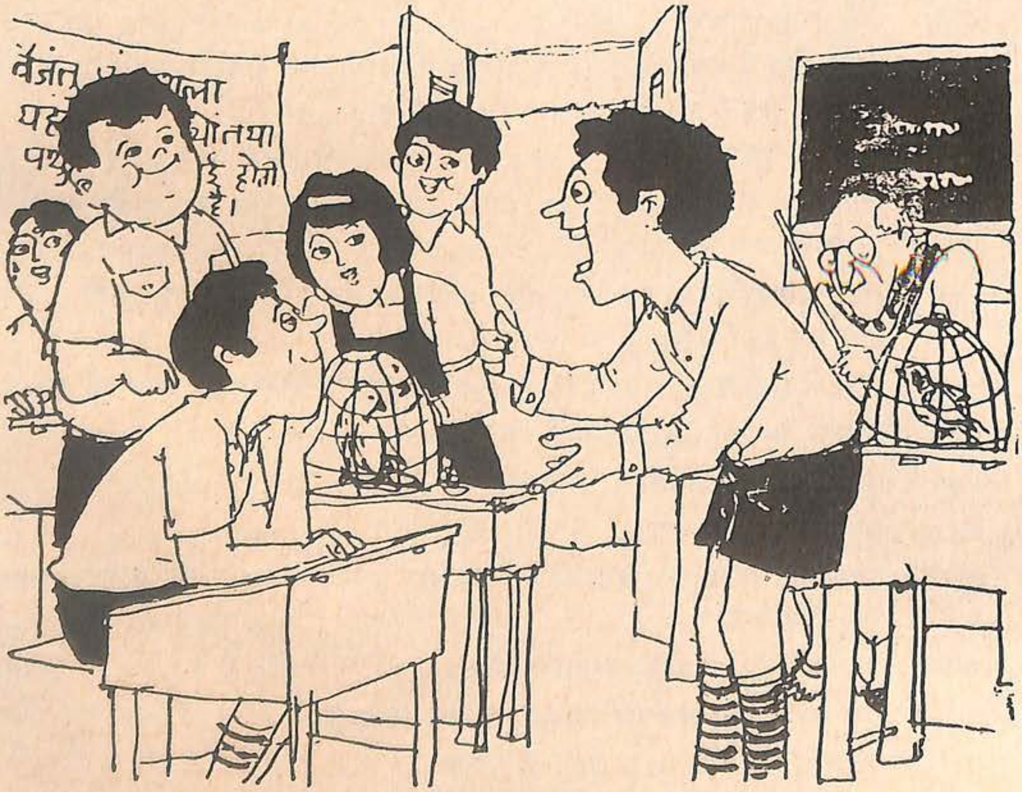

सब बच्चे ताली बजाते हैं ... हंसते हैं ... मुर्गियां कुट-कुट करती हैं। पिल्ले भौंक रहे हैं ...तोता चीखता है ... गुस्से में प्रिंसिपल का प्रवेश।

प्रिंसिपल : **(जम्हाई लेकर डांटते हुए)** मास्टर जी, आप खुद मज़े में सो रहे हैं, और दूसरे की नींद का कोई ध्यान नहीं? इतना शोर मच रहा है कि मुझे नींद ही नहीं आ रही है। बहुत गलत बात है।

मास्टरजी : **(अंगड़ाई लेकर खड़े होते हुए)** क्षमा करें। अब शोर नहीं होगा। आप जाकर सोइए। **प्रिंसिपल गुस्से में चले जाते हैं।**

मास्टरजी : प्यारे बच्चो,मुर्गियों और तोतो! तुम्हें ध्यान रखना चाहिए कि प्रिंसिपल साहब सो रहे हैं। चुपचाप पढ़ो। जिसे शोर मचाना हो, वह मुंह बंद करके शोर मचाएं, ताकि आवाज न हो। शाबाश!

मास्टरजी पुनः आंखें मूंदकर नाक बजाने लगते हैं। बच्चे ठहाका मारकर हंसते हैं। पर्दा बंद होता है।

□ □ □

□ **के.पी. सक्सेना**

(लेखक के संग्रह 'शेर खूंटी पर टंगा है' से साभार)

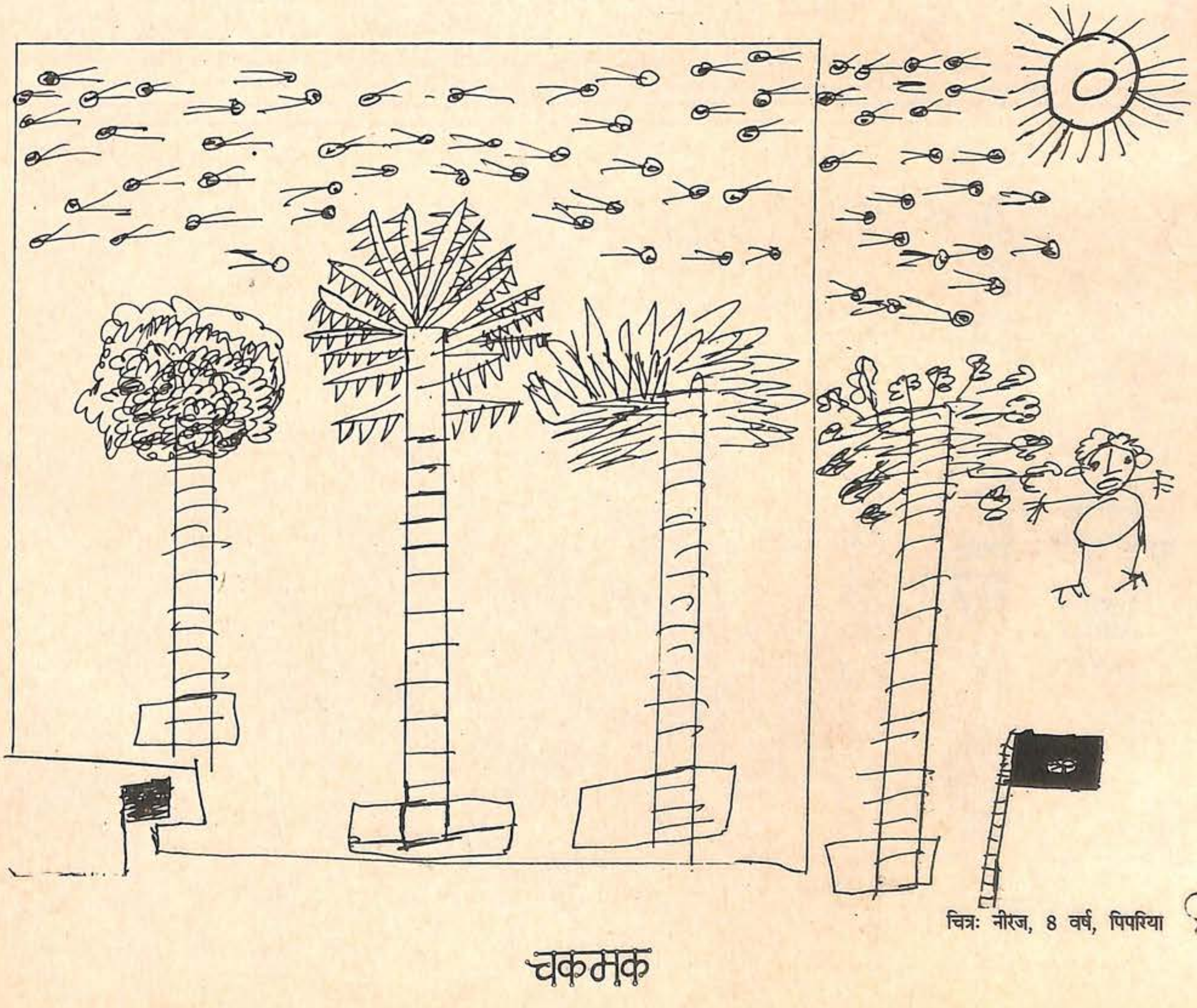

चित्रः नीरज, 8 वर्ष, पिपरिया

बंधा

जहाँ नाले में पानी की अच्छी आवक हो या जमीन कट रही हो ।

लोहे की जाली से रुकी हुई मिट्टी और टहनियों का बंधा । इसे बनाइये - पानी और मिट्टी दोनों बचेंगे ।

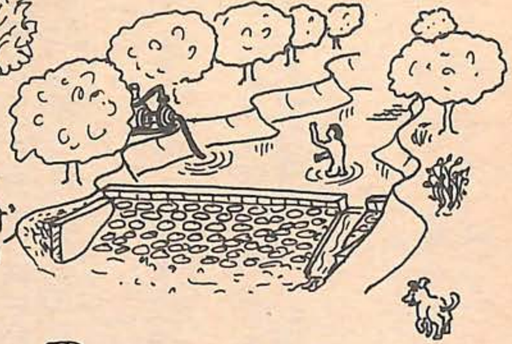

पत्थर और मिट्टी का बंधा जो 'गली' नियंत्रण करता है ।

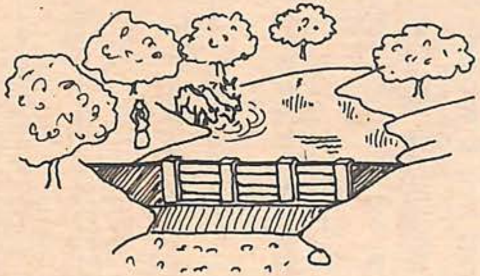

सीमेंट का चेक डैम बनाइये । पशुओं को पानी मिलेगा ।

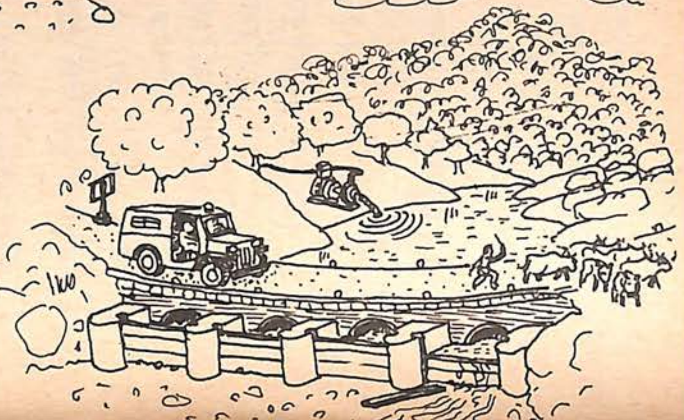

स्टॉप डैम । देखिये इसके कितने उपयोग हैं ।

बाँध

जहाँ बड़े नाले में पानी की अच्छी आवक हो।

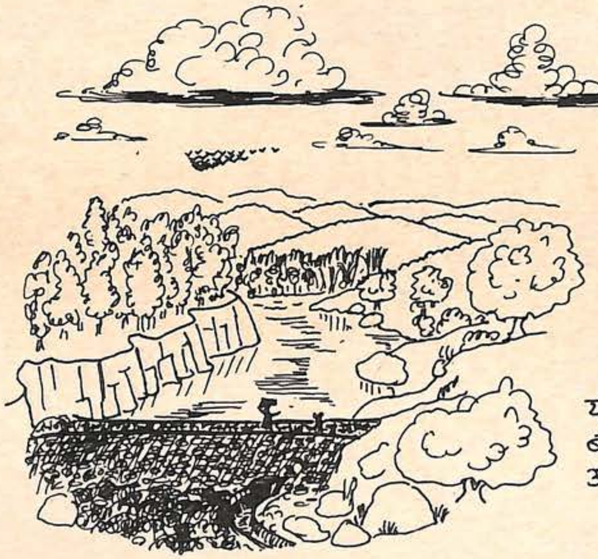

यह जगह बाँध बनाने के लिये अच्छी है।

बाँध कहाँ बनाना चाहिये ?

1. नाले में पर्याप्त पानी होना चाहिये।
2. छोटे से छोटा बाँध ज़्यादा से ज़्यादा पानी दे।
3. नींव मजबूत और पत्थर की हो।
4. बाँध बनाने के लिये पत्थर मिट्टी पास में ही हो।
5. सिंचाई के लिये नहर आसानी से बन सके।
6. जलाशय पहाड़ी क्षेत्र में हो।

जहाँ पानी रोकते हैं वहाँ मछली भी डाल सकते हैं।

बाँध के नीचे की ज़मीन के कुओं में पानी भी बढ़ता है।

तालाब

जहाँ ज़मीन गड्ढा (नीची) हो।

मेड़ पर पेड़ लगाने से मेड़ मजबूत होगी।

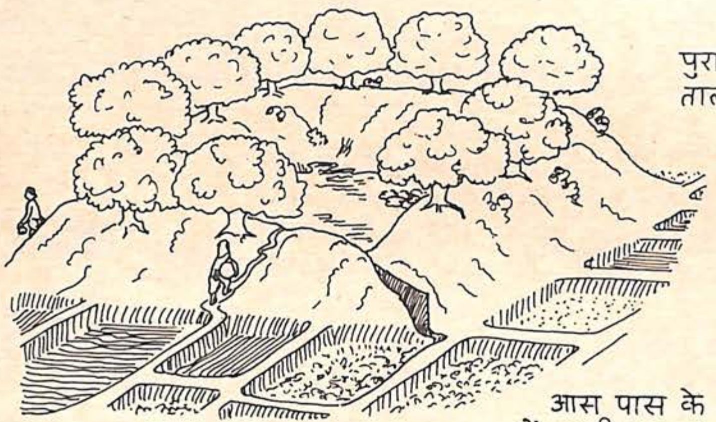

आस पास के खेतों में दूसरी फसल लें।

बड़े खेत का एक तिहाई हिस्सा खोद कर तालाब बना लेने से दूसरी फसल को भी पानी मिल जायेगा।

तालाब के चारों तरफ रूंध कर एक कोने में जानवरों के पीने के लिये अलग से व्यवस्था कर देने से पानी गंदा नहीं होगा और तालाब भी नहीं टूटेगा।

जोताई

ढालू या समतल ज़मीन पर ।

ढालू ज़मीन पर कंटूर (समतल रेखा) के साथ हल जोतने से पानी ज़मीन पर रुक जायेगा और उसी में समा जायेगा ।
कंटूर बंडिंग करने से सीढ़ी-नुमा खेत भी बन सकते हैं जहाँ मेड़ पानी और मिट्टी दोनों को रोकते हैं ।

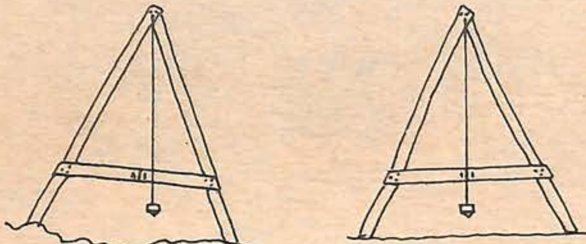

कंटूर नापने का सरल यंत्र । समतल ज़मीन पर रस्सी बीच में लटकती है ।

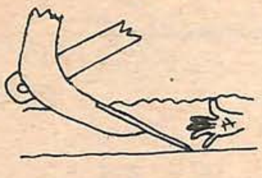

गरमी की जोताई बरसात के पानी को ज़्यादा सोखती है ।
फार को ज़मीन में एक बीते से अधिक जोतने से मिट्टी जल्दी सूख जायेगी ।

इस हल से जोतने से मिट्टी पलटती नहीं और एक हाथ की गहराई तक जोतने से पानी सोखने में आसानी होती है ।

फसल

कुछ फसलें कम पानी चाहती हैं और ज़मीन को भी सुधारती हैं ।

मुख्य फसल के बीच में दूसरी फसल लीजिये । झकड़ा जड़ फसलों (कोदों, ज्वार, मकई) के बीच में मूसला जड़ फसल (तिलहन या दलहन) लेने से पैदावार बढ़ेगी । ज्वार या बाजरा लेते हैं तो बीच में मूँगफली बोने से पानी भी बचेगा, मिट्टी का कटाव भी न होगा, और ज़मीन में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ेगी ।

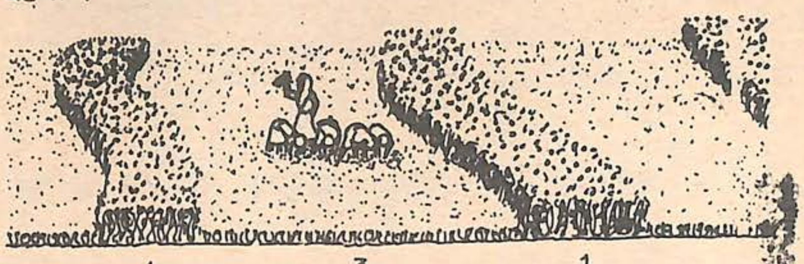

फसल के बीच बीच में घास भी लगा सकते हैं या पत्तों और कूड़े से ढाँक दें । इससे ज़मीन अधिक पानी सोख पायेगी और पानी हवा में न उड़ेगा ।

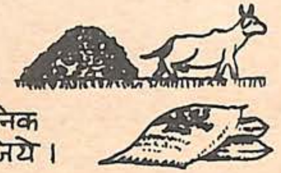

मिट्टी की जाँच करवाइये ।
उस हिसाब से खेत में गोबर खाद और रसायनिक खाद का इस्तेमाल कीजिये ।

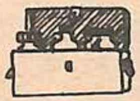

पहली फसल (खरीफ) में ज़्यादा से ज़्यादा अरहर बो सकते हैं ।
खरीफ में उरद या मूँग लेंगे तो दूसरी फसल (रबी) में गेहूं, चना, अलसी, सरसों, या ज्वार की अच्छी उपज मिलेगी ।

गोबर खाद की मात्रा बढ़ाने के लिये खाद गड्ढे में डालिये या गोबर-गैस में ।

जंगल और चारा

जहाँ ऊबड़-खाबड़, पथरीली, और बंजर ज़मीन हो; और मेड़ों और उपजाऊ ज़मीन पर भी लगाइये।

पेड़ बरसात के तेज़ पानी को रोक कर धीरे धीरे जमीन पर टपकाता है।

पेड़ की सूखी टहनियाँ जलाने के काम आती हैं।

सड़े, सूखे पत्ते ज़मीन को ढाँक कर पानी को रोकते हैं।

जड़ें मिट्टी और पानी को बाँध कर रखती हैं।

बबूल, नीम, जामुन, आम, महुआ, करही, बाँस, शीशम, हर्रा, बहेरा, इमली, आँवला, पीपल जैसे उपयोगी पेड़ खूब लगाइये।

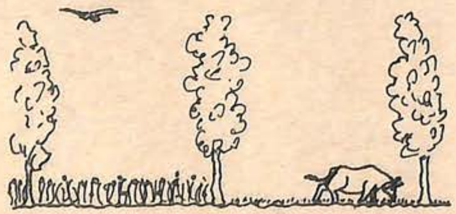

ज़मीन के कुछ हिस्सों पर, पेड़ों के बीच, घास या चारा लगाइये जैसे कि बरसीम, एम.पी. चरी, दीनानाथ घास। चारा मिट्टी की ताकत को बढ़ाने के लिये खाद पैदा करता है। घास मिट्टी को पानी से कटने नहीं देती है।

नियंत्रित चराई करवाइये।

पानी का सही उपयोग कीजिये

सलाह और सहायता के लिये :-

सरकारी विभागों से सम्पर्क करें

पटवारी
ग्राम सेवक
ग्राम सहायक
कृषि विस्तार अधिकारी
विकास खण्ड अधिकारी
सिंचाई विभाग
ग्रामीण विस्तार विकास अधिकारी
पशु चिकित्सा अधिकारी
ग्रामीण विकास अभिकरण
और **कलक्टर** से मिलिये।

ग्रामीण इलाकों में गरीबी रेखा के नीचे लोगों को विशेष सहायता मिलेगी। सबसे गरीब लोगों को पहले मिलेगी – जो साल में रु. 2250 से कम कमाते हैं।

छूट :- लघु कृषक (2½ से 5 एकड़) को 25% (चौथाई); सीमांत कृषक (2½ एकड़ से कम) को 33⅓% (तिहाई); आदिवासी, हरिजन, ग्रामीण शिल्पी को 50% (आधा)।

स्वरोजगार के लिये ट्राइसेम में प्रशिक्षण लीजिये।

अपने से जितना हो सके उतना तो ज़रूर कीजिये।

पानी सम्बंधी राहत कार्य खुलवाइये। पशुओं को बचाइये। काम मांगिये। बेरोजगारों की सूची कलक्टर को दीजिये।

बैंक अधिकारियों से मिलिये

व्यावसायिक (जैसे भारतीय स्टेट बैंक) और अन्य बैंकों (जैसे भूमि विकास बैंक, सहकारी बैंक, ग्रामीण बैंक) से व्यक्तियों और सहकारी समितियों को कर्ज़ा मिलता है।

10 से 14 प्रति सैंकड़ा सूद। कर्ज़ा पाटने के लिये 3 से 14 साल का समय मिलता है।

पर्यावरण इकाई, विदूषक कारखाना, अनूपपुर, शहडोल, म.प्र. के सौजन्य से

(1)

कुछ बाज़ उड़ते-उड़ते थक गए। उन्होंने सोचा चलो पेड़ पर बैठा जाए। नीचे कुछ पेड़ थे, अगर एक-एक बाज़ एक-एक पेड़ पर बैठता है, तो एक बाज़ बच जाता है। और अगर एक पेड़ पर दो-दो बाज़ बैठें, तो एक पेड़ बच जाता है। बताओ, कितने बाज़ हैं और कितने पेड़ हैं?

(2)

आबादी घट रही है!

आज जीवित किसी भी मनुष्य की एक मां, एक पिता होगा। दादा-दादी, नाना-नानी होंगे। अर्थात एक पीढ़ी पहले उसके 2 पूर्वज थे, दो पीढ़ी पूर्व 4 या 2×2 या 2^2 पूर्वज थे; तीन पीढ़ी पूर्व $2\times2\times2$ या 2^3 पूर्वज थे। मान लो कि एक पीढ़ी 30 वर्ष रहती है, तब केवल 600 वर्ष पूर्व या 20 पीढ़ियों पूर्व, हममें से प्रत्येक के 2^{20} या 1,040,400 पूर्वज थे।

किसी ने इस पहेली के आधार पर यह सिद्ध किया कि आज से 600 वर्ष पूर्व संसार की जनसंख्या आज के मुकाबले दस लाख गुनी अधिक थी। इस पहेली में क्या गड़बड़ है — आसानी से पकड़ सकते हो?

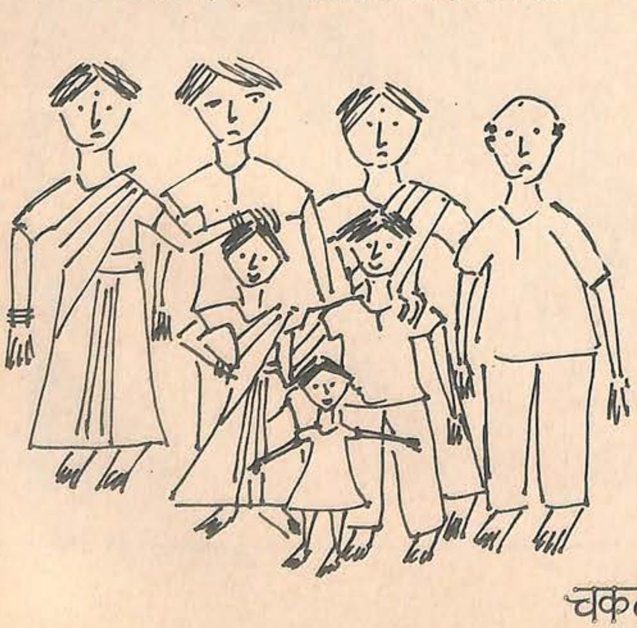

(3)

आयु और रुपए

इस पहेली द्वारा तुम किसी की आयु व उसकी जेब में कितने रुपए हैं — बता सकते हो! यहां यह अभ्यास राजेश और शफीक के बीच हो रहा है:

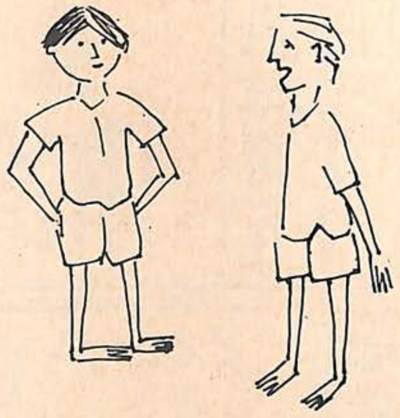

राजेश : अपनी आयु को 2 से गुणा करो, 5 जोड़ो फिर इस परिणाम को 50 से गुणा करो, जेब में जितने रूपए हों (100 से कम), उन्हें जोड़ दो। कुल जोड़ में से एक वर्ष के दिनों की संख्या को घटा दो और परिणाम मुझे बताओ।

शफीक : (जिसकी आयु 25 वर्ष है और जेब में 3 रुपए हैं, पसीना पोंछ कर गणना करता है — 50, 55, 2750, 2753, 2388) 2388!

राजेश : (राजेश इस संख्या में 115 जोड़ देता है। नई संख्या होती है 2503) तुम्हारी आयु 25 वर्ष है और तुम्हारी जेब में 3 रुपए हैं।

शफीक : (चौंक कर) एकदम सही ... सचमुच गज़ब हो गया!

हल करके बताओ कि क्या हमेशा ही सही उत्तर मिलेगा और क्यों?

(4)

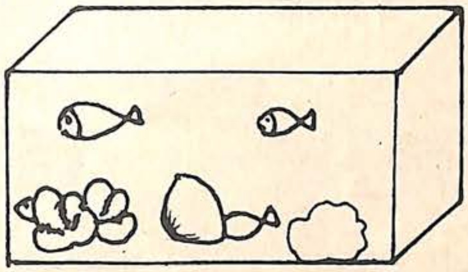

"मुन्नी को मछलीघर में दो बड़ी और चार छोटी मछलियां दिखीं। चुन्नू को दो बड़ी और तीन छोटी मछलियां दिखीं। मां को तीन बड़ी और पांच छोटी मछलियां दिखीं। मां ने सारी मछलियां देख लीं।" बताओ वास्तव में मछलीघर में कितनी मछलियां हैं?

(5)

वेतन किस बात का?

एक महाशय ने नौकरी के लिए आवेदन पत्र भेजा। साक्षात्कार के समय दस हजार रुपए प्रतिवर्ष वेतन की इच्छा जाहिर की। लेकिन मैनेजर साहब कुछ इस तरह सोचते थे —

"एक वर्ष में 365 दिन होते हैं। आप प्रतिदिन आठ घंटे सोते हैं कुल हुए 122 दिन। शेष रहे 243 दिन।

आप प्रतिदिन आठ घंटे आराम करते हैं, यानि कुल 122 दिन। शेष बचे 121 दिन।

वर्ष में 52 रविवार आप काम नहीं करेंगे, बचे 69 दिन।

हर शनिवार को आपको आधे दिन की छुट्टी मिलेगी यानि कुल 26 दिन। शेष बचे 43 दिन।

आफिस समय के बीच भी आपको एक घंटे की छुट्टी मिलेगी यानि कुल मिलाकर 15 दिन। ये भी घटा दिए तो बचे 28 दिन।

इतना ही नहीं आपको 14 दिन की अतिरिक्त छुट्टी मिलेगी। शेष बचे केवल 14 दिन।

इसके अलावा भी त्यौहार, जयंती आदि की वर्ष भर में 10 और छुट्टियां होती हैं, ये भी निकाल दो तो बचे केवल 4 दिन।

तो महाशय, क्या इन 4 दिनों का वेतन आप 10,000 रुपए मांगते हैं?

यह क्या हुआ? सुलझाओ!

वर्ग पहेली : 3

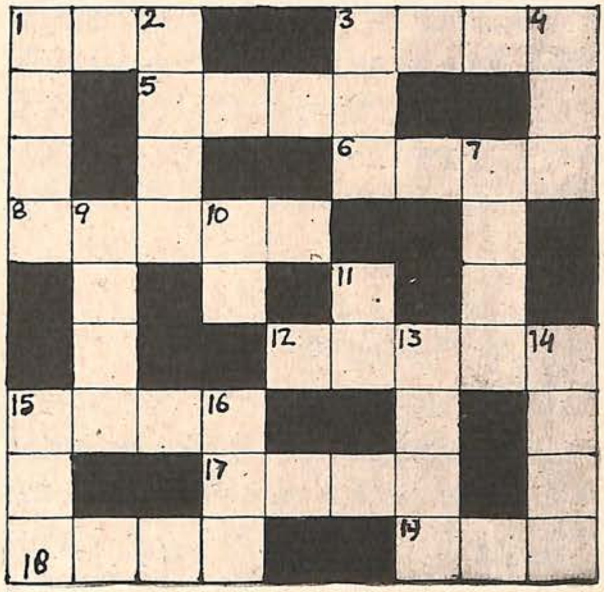

संकेत : बाएं से दाएं

1. प्रतिशोध या परिवर्तित किया (3)
3. लगातार देखना (4)
5. मज़मे की भीड़ (4)
6. राजा की फौज, एक शहर (4)
8. आयाराम गयाराम का काम (5)
12. काम बन जाना या एक व्यंजन पकने का एक हिस्सा (5)
15. बेसिर असरदार मुखिया (4)
17. पानी का सेवन या नाश्ता (4)
18. काटने का औज़ार (4)
19. गांधी जी का एक सत्याग्रह इसके लिए भी था (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. एक पेड़ (4)
2. निरुत्तर, बेजोड़ (4)
3. दृढ़, नेता (3)
4. यकायक मरने में शरीर का अंग है (3)
5. आज नहीं, आज नहीं, बहते पानी की आवाज़ (4)
9. चुनौती (4)
10. हारने के सदमे में उल्टा अंक (2)
11. उल्टे होंठों का जोर (2)
13. गणेश (4)
14. यदि अभी तक तुम्हें एक भी शब्द नहीं आया तो तुम क्या हो? (4)
15. रास्ता (3)
16. पच्चीस वर्ष नहीं, जयंती (3)

(6)

सिगरेट और बीड़ी पीना शरीर के लिए हानिकारक है। लेकिन जिसको लत लग जाए वह कहां मानने वाला। न मिले तो जले व फैंके हुए सिगरेट के टुकड़े तक उठाकर पीने लगता है। एक ऐसे ही महाशय 6 टुकड़ों से एक पूरी सिगरेट बनाते हैं। 36 टुकड़ों से इन्होंने कितनी सिगरेट बनाई और पी होंगी? (वैसे तो इन महाशय को डाक्टर की सलाह लेनी चाहिए।)

(7)

यह एक पुरानी पहेली है लगभग 310 ई. के आसपास की।

डेमोकारस ने अपने जीवन का 1/4 हिस्सा एक बच्चे के रुप में गुज़ारा, 1/5 हिस्सा युवा के रुप में और 1/3 अधेड़ के रुप में। अंतिम 13 साल वृद्ध के रुप में बीते। बताओ आखिर उसकी आयु क्या होगी?

शब्द पहेली

	म	ा (आ)	न
र	व	अ	थ
	ि, ई	क	ा (आ)

यहां वर्ग में कुछ अक्षर (स्वर व व्यंजन) और बाहर 'र' अक्षर दिया है। तुम्हें इन अक्षरों की मदद से कम से कम 35 शब्द बनाने हैं।

शर्त यह है कि,

(1) प्रत्येक शब्द में 'र' आना चाहिए,

(2) एक अक्षर का उपयोग एक बार ही किया जा सकता है,

(3) वर्ग में दिए अक्षरों के अलावा अन्य किसी अक्षर का उपयोग नहीं किया जा सकता,

(4) बनने वाले शब्द का कुछ अर्थ भी होना चाहिए, जैसे; करना, कम, अनार, आना, मारा आदि।

अंत में वर्ग के सभी अक्षरों को मिलाकर ऐसे दो शब्द बनाओ, जिन पर यह अंक केन्द्रित है।

वर्ग पहेली 2 : हल

1 च	ट	2 प	टा			3 तु	रु	4 प
म		नी		5 सु	श्रु	षा		च
6 चा	क	र		वि		8 र	क	म
	स		9 आ	धा	10 र			ढ़ी
	11 क	म	रा		12 वा	द	13 क	
14 वि			15 म	16 ना	ना		रे	
17 वा	च	18 न		वि		19 स	ला	20 म
हि		21 ज	न	क		फ		का
22 त	ब	ला			23 ब	ल	वा	न

उत्तर : नवम्बर अंक के

1. 10 गिलास
2. 991 बिल्लियां (अब बताओ हर बिल्ली ने कितने चूहे मारे?
3.

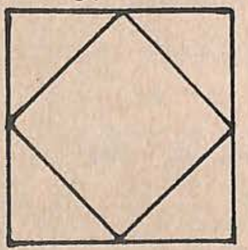

4. उनके दाएं पांव कभी भी एक साथ नहीं उठेंगे।
5. चिंटू के पास 5 और हमीदा के पास 3 कंचे हैं। कोई और उत्तर भी संभव है क्या?
6. 10 और 7
7. चार । पहले तीन निकाले गए सभी कंचों का रंग अलग-अलग हो सकता है, लेकिन चौथा ज़रुर पहले तीन में से किसी कंचे के रंग का होगा।
8. 1, 3, 9, 27 व 81 किलोग्राम के कुल मिलाकर पांच बांट।
9. 30
10. 60 आंखों का मतलब है कि कुल जानवर 30 थे। थोड़ी माथा पच्ची करने से पता लगेगा कि बकरियां 13 रही होंगी और मुर्गे 17।

बंदी बाप के चित्र, बेटे के लिए

इस अंक के सभी रंगीन चित्र युवां कारलोस रोड्रिगस ने अपने बेटे के लिए जेल में बनाए हैं। युवां कारलोस को अर्जेंटीना सरकार ने उनके विचारों के कारण 1976 में बंदी बनाकर जेल भेज दिया था। युवां कारलोस के साथ उसकी गर्भवती पत्नी मरीसा भी थी। पहले नौ महीनों तक उनके बारे में किसी को कुछ नहीं मालूम था। उन दिनों युवां कारलोस की तरह अन्य कई हज़ार लोगों को अर्जेंटीना सरकार ने जेल में बंद कर रखा था। लोग एकाएक 'लापता' हो जाते, यानि जेल भेज दिए जाते।

जेल में मरीसा ने पेट्रोशियों को जन्म दिया। जब पेट्रोशियों तीन माह का था तो जेल के अधिकारियों ने उसे अपनी मां से अलग कर दिया। एक साल तक पेट्रोशियों के बारे में उन्हें कोई खबर नहीं मिली। एक साल बाद उन्हें पता चला कि उनका बेटा उनके परिवार में सकुशल है। इस मामले में कारलोस दंपति खुशनसीब थे। सैंकड़ों अन्य बंदी मां-बाप अपने बच्चों की शक्ल कभी नहीं देख सके। दो वर्ष और बीतने पर मरीसा को जेल से रिहा कर दिया गया। रिहा होते ही मरीसा, पेट्रोशियों को लेकर अमरीका चली गई और वहां से अपने पति युवां कारलोस की रिहाई के लिए प्रयत्न करने में जुट गई। पेट्रोशियों ने भी अर्जेंटीना के राष्ट्रपति को एक पत्र लिखा जो यहां दिया गया है।

मरीसा को सहायता मिली एक संस्था से जो पूरे विश्व में ऐसे बंदियों की रिहाई और अधिकार के लिए संघर्ष करती है। इस संस्था का नाम है 'एमनेस्टी इंटरनेशनल'।

इस दौरान युवां कारलोस और अन्य ऐसे बंदियों पर बेतहाशा अत्याचार किए गए। लेकिन जितना जुल्म सरकार बढ़ाती गई,इन बंदियों के विचार उतने ही कठोर होते गए।इन बंदियों को न तो अखबार पढ़ने को दिया जाता न ही कोई अन्य किताब। यहां तक कि पत्र व्यवहार करने की भी आज़ादी नहीं थी। लेकिन एमनेस्टी इंटरनेशनल तथा ऐसी ही कुछ अन्य संस्थाओं के दबाव और संघर्ष के कारण सरकार को इन बंदियों को ऐसी कुछ सुविधाएं उपलब्ध करानी ही पड़ीं। अब बंदियों को कभी-कभी अपने परिवार को पत्र लिखने की इजाज़त दी जाने लगी और कभी-कभार पढ़ने के लिए एकाध अखबार या पत्रिका भी।

युवां कारलोस ने अपने बेटे पेट्रोशियों का चेहरा भी नहीं देखा था। उसके मन में अपने बेटे के लिए कुछ चित्र बनाने की इच्छा हुई, पर चित्रों के लिए रंग कहां से आते? जेल में तो पेन और कागज के सिवाए और कुछ नहीं मिलता था।

पर युवां कारलोस ने विकल्प ढूंढ निकाला। उसने खाने-पीने की चीजों से रंग बनाए। चुकंदर से लाल और गुलाबी रंग, कॉफी से गहरा लाल, चाय से हरा और पेन की स्याही और पानी की मदद से नीला रंग बनाया। युवां कारलोस के ढेर सारे अन्य चित्र जेल के दरबानों ने नष्ट कर दिए। पर अपना भोजन बेचकर युवां कारलोस ने कुछ चित्र बचा लिए। आखिर एक बाप अपने ऐसे बेटे को जिसकी उसने शक्ल भी नहीं देखी हो, और क्या दे सकता था? इसीलिए एक बंदी के लिए ये चित्र अनमोल हो गए, क्योंकि इन चित्रों से ही उसकी यह आशा बनी रही कि सरकार कितना भी ज़ुल्म करे, उसके दिल में प्यार को कम नहीं कर सकती।

मिस्टर प्रेसिडेंट,

मेरे पापा अच्छे हैं, उन्हें छोड़ दीजिये। मैंने उनको बहुत दिनों से नहीं देखा हैं। वो मुझे छोटी छोटी तस्वीरें और कहानियां भेजते रहतें हैं। अपनी दादी के साथ पहले मैं ला प्लाता जाता था......... अब मैं नहीं जा सकता। वो बहुत दूर हैं और वहां तक जाने के लिये जहाज में जाना होगा। मेरी माँ भी कहती है कि आप उनको छोड़ दो तो हम तीनों साथ रहेंगे फिर पापा मुझे मिठाई और खिलौनें ले देंगे।

मेरे दोस्त मुझे कहतें हैं तेरा पापा कहां हैं। मैं उनको कहता हूँ कि जब आप मिस्टर प्रेज़िडेंट मेरे पापा को छोड़ देंगे वो हम सब के साथ फुटबाल खेलेंगें।

पेट्रीशियो

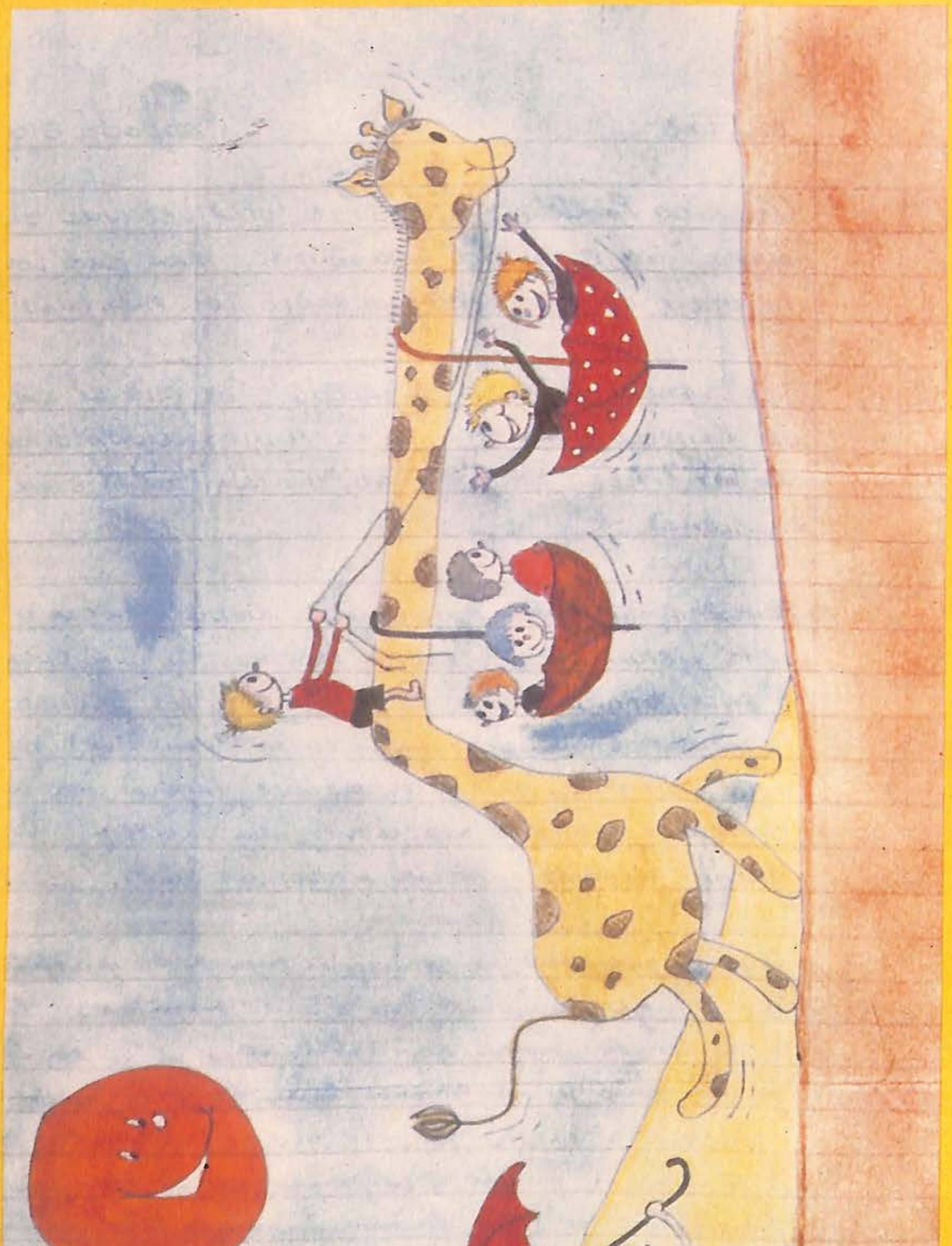

आखिर 'अधिकार' क्या है?

अगर कोई मुझसे कहे कि लिखो कि तुम क्या चाहते हो? तो मैं इतना लिखूं, इतना लिखूं कि एक पूरी चकमक भर जाए और फिर भी लिखना बाकी रह जाए। शायद यही हाल तुम्हारा भी हो। पर यही बात कम से कम शब्दों में कहनी हो, तो मैं कहूंगा कि मैं स्वस्थ्य रहना चाहता हूं, खुश रहना चाहता हूं। और आज़ाद रहना चाहता हूं। अब अगर मैं तुम सबसे सीधे बात कर पाता तो पूछ लेता तुम सब क्या चाहते हो। पर ऐसा संभव नहीं है। फिर भी मैं यह मानकर चल रहा हूं कि मेरे इस 'चाहने' में तुम सब कुछ और बातें भले ही जोड़ दो, पर इनसे भी तुम्हारी सहमति है।

तो हम सब स्वस्थ्य रहना चाहते हैं, खुश रहना चाहते हैं और आज़ाद रहना चाहते हैं। इन 'चाहतों' को पूरी करने के लिए कुछ बुनियादी ज़रूरतें हैं। स्वस्थ्य रहने के लिए हमें साफ हवा, साफ पानी, पर्याप्त भोजन, कपड़े और रहने के लिए जगह की ज़रुरत है। खुश रहने के लिए हमें दोस्त, खेलकूद के साधन और आज़ादी, किताबें और मनपंसद काम चाहिए। आज़ाद रहने के लिए ऐसा माहौल चाहिए जहां हम अपने मन की बात कह सकें, कर सकें और ज़रुरत हो तो लिख सकें।

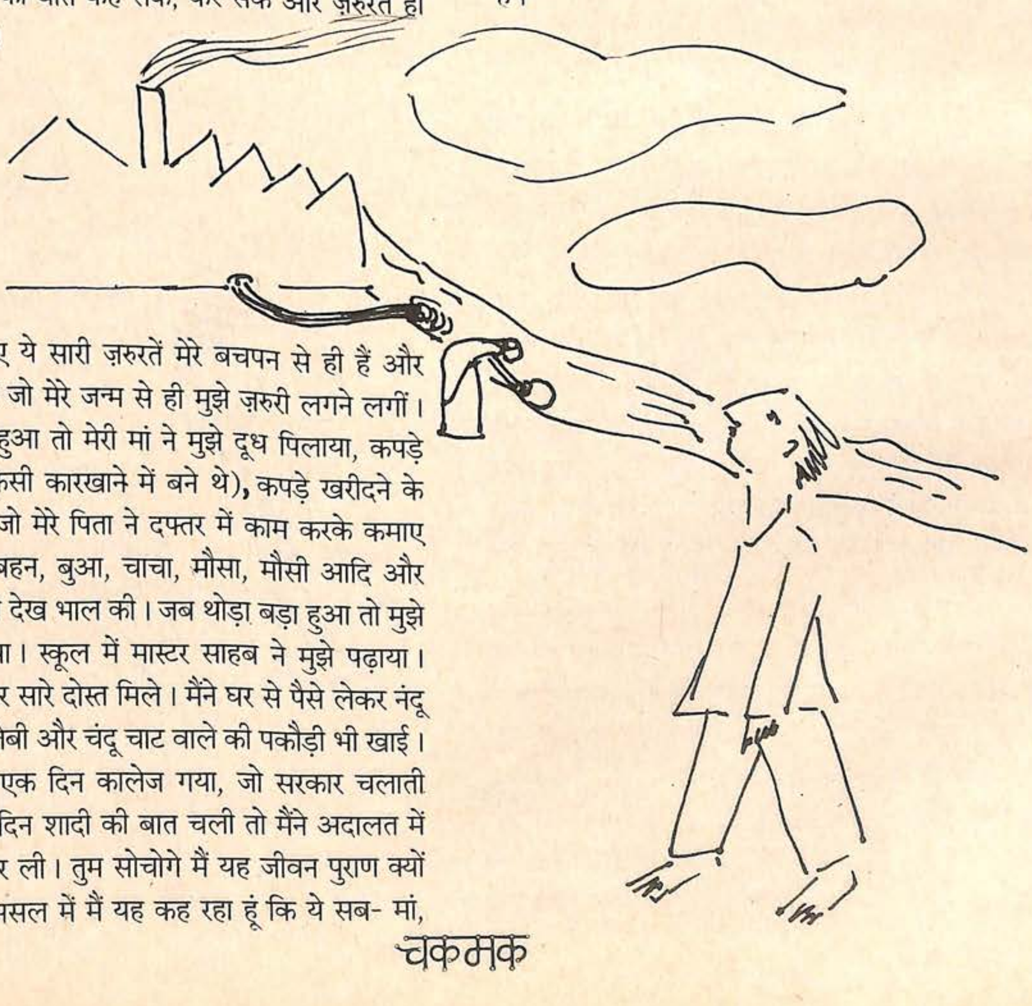

मेरे लिए ये सारी ज़रुरतें मेरे बचपन से ही हैं और कुछ तो ऐसी हैं जो मेरे जन्म से ही मुझे ज़रुरी लगने लगीं। जब मेरा जन्म हुआ तो मेरी मां ने मुझे दूध पिलाया, कपड़े पहनाए (जो किसी कारखाने में बने थे), कपड़े खरीदने के लिए पैसे दिए जो मेरे पिता ने दफ्तर में काम करके कमाए थे। मेरे भाई, बहन, बुआ, चाचा, मौसा, मौसी आदि और पड़ोसियों ने मेरी देख भाल की। जब थोड़ा बड़ा हुआ तो मुझे स्कूल भेजा गया। स्कूल में मास्टर साहब ने मुझे पढ़ाया। स्कूल में मुझे ढेर सारे दोस्त मिले। मैंने घर से पैसे लेकर नंदू हलवाई की जलेबी और चंदू चाट वाले की पकौड़ी भी खाई। बड़ा होते-होते एक दिन कालेज गया, जो सरकार चलाती थी। फिर एक दिन शादी की बात चली तो मैंने अदालत में जाकर शादी कर ली। तुम सोचोगे मैं यह जीवन पुराण क्यों बता रहा हूं। असल में मैं यह कह रहा हूं कि ये सब- मां, बाप, भाई, बुआ, पड़ोसी, दोस्त, स्कूल, मास्टर, हलवाई, कारखाना, सरकार, दफ्तर, अदालत मिलकर जो कुछ बनता है उसे ही **समाज** कहते हैं। यानी कि मैं या हम सब अपनी ज़रुरतें समाज से पूरी करते हैं।

समाज में अलग-अलग तरह के लोग रहते हैं और ज़ाहिर है कि उनकी अलग-अलग तरह की ज़रुरतें होंगी। इन ज़रुरतों में से कुछ तो आसानी से पूरी हो जाती हैं, उनके पूरा होने में कोई अड़चन नहीं होती है। जैसे तुम्हारा छोटा भाई चाहता है कि वह पूरे कमरे में घुटनों के बल चले, क्योंकि उसे ऐसा करना अच्छा लगता है। अब तुम चाहोगे कि वह तुम्हारी गणित की पुस्तक पर से न जाए या उस पर पेशाब न कर दे। ऐसी ज़रुरतों के बीच होने वाले झगड़ों का निपटारा शायद आसानी से हो जाता है। जैसे या तो तुम अपनी पुस्तक उठाकर ऊपर रख दो या तुम्हारा भाई यह मान जाए कि वह तुम्हारी किताब पर से नहीं जाएगा। पर आमतौर पर ज्यादातर ज़रुरतें इतनी आसानी से पूरी नहीं होतीं। उनके लिए झगड़ा होता है, टकराव होता है या यह कहें कि संघर्ष करना पड़ता है।

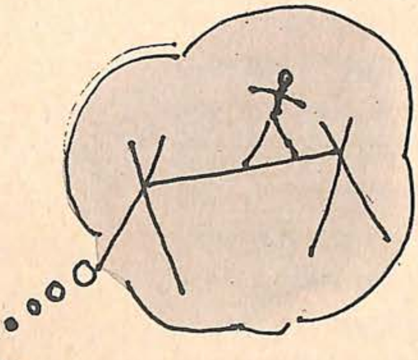

कहोगे बात तो हम अधिकार की करने वाले थे और ये कहां का पचड़ा ले बैठे। नहीं ऐसी बात नहीं है, ज़रुरत और अधिकार के बीच बस एक कदम का फासला है। कैसे? वह ऐसे कि मज़दूरों की यह चाहत है कि उन्हें इतनी मज़दूरी मिले ताकि अपनी तमाम ज़रुरतों को पूरा कर सकें, पर साथ ही उनका इतना अधिकार तो है ही कि कम से कम दो जून का खाना जुटाने लायक मज़दूरी मिले। या तुम और तुम्हारे दोस्त चाहते हैं कि वे दिन भर खेलते रहें। निश्चित रुप से यह संभव नहीं है। पर इतना अधिकार तो होना ही चाहिए कि तुम्हें खेलने एवं अपना मनोरंजन करने के लिए कम से कम एक-दो घंटे का समय तो मिले ही।

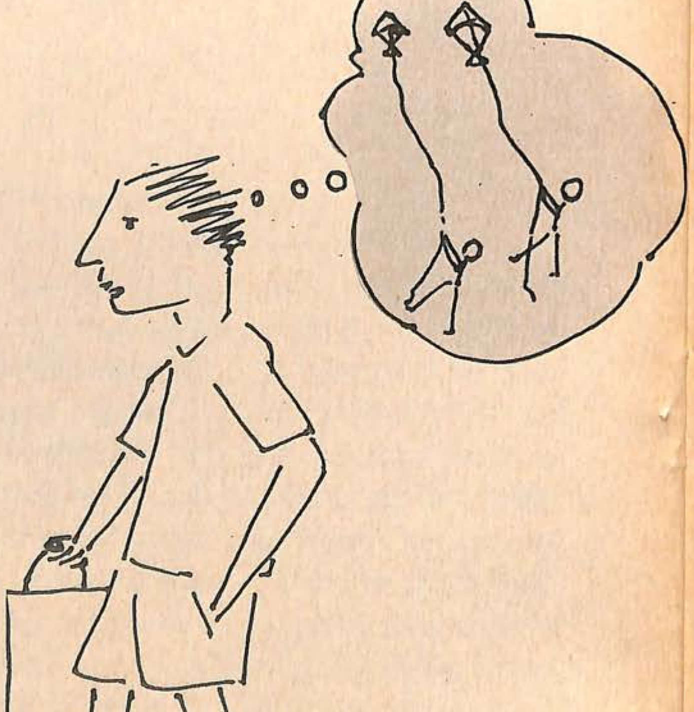

जैसे स्वस्थ्य रहने के लिए ज़रुरी है कि शुद्ध हवा मिले। पर कारखाने के मालिक को ज़हरीला धुंआ हवा में छोड़ना अधिक ज़रुरी लगता है ताकि कम लागत में उत्पादन हो और वह अधिक लाभ कमा सके। मज़दूरों को यह ज़रुरी लगता है कि उन्हें अपनी मेहनत का पूरा मेहनताना मिले ताकि वे अपनी ज़िंदगी अच्छी तरह जी सकें। दूसरी तरफ ठेकेदार को यह ज़रुरी लगता है कि वह कम मज़दूरी देकर अधिक काम करवा सके। तुम यह चाहते हो कि स्कूल जाते हुए थोड़ी देर रुककर बया का घोंसला देख सको और मास्टरजी यह ज़रुरी समझते हैं कि तुम प्रार्थना के समय स्कूल में उपस्थित रहो ताकि अनुशासन बना रहे। ऐसे और ढेर सारे उदाहरण दिए जा सकते हैं।

तो अलग-अलग तरह की ज़रुरतों के बीच टकराव होता है। और इन ज़रुरतों को आवश्यक मानने वाले लोग एक तरफ हो जाते हैं। एक जैसी ज़रुरतों वाले लोगों को मिलाकर एक समूह बनता है और चूंकि ये समाज के ही अंग हैं इसलिए 'सामाजिक समूह' कहना ठीक होगा। अब ऊपर की सारी बातचीत को कम से कम शब्दों में कहें तो अलग-अलग सामाजिक समूहों की ज़रुरतों के बीच टकराव होते हैं। तुम

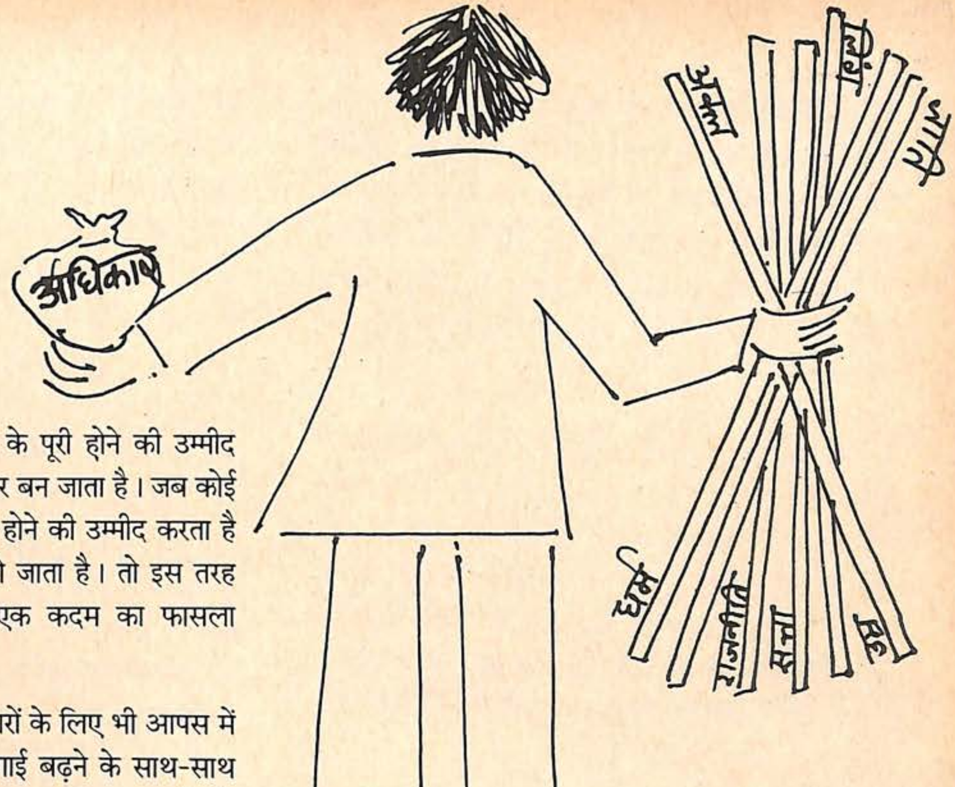

तो जब हम किसी ज़रुरत के पूरी होने की उम्मीद करते हैं तो वह हमारे लिए अधिकार बन जाता है। जब कोई समूह उसकी किसी ज़रुरत के पूरा होने की उम्मीद करता है तो वह उस समूह का अधिकार हो जाता है। तो इस तरह ज़रुरत और अधिकार के बीच एक कदम का फासला है-ज़रुरत के पूरा होने की उम्मीद!

ज़रुरतों की तरह ही अधिकारों के लिए भी आपस में टकराव होता है। जैसे मज़दूर मंहगाई बढ़ने के साथ-साथ पहले से ज्यादा मज़दूरी पाना अपना अधिकार मानते हैं, दूसरी तरफ मज़दूरी तय करना मालिक अपना अधिकार मानते हैं। या तुम समझते हो कि स्कूल की छुट्टी के बाद अंधेरा होने तक खेलने का तुम्हें अधिकार है, दूसरी तरफ तुम्हारे पिताजी यह मानते हैं कि खेलने के वक्त सिगरेट लाने (या अन्य कोई सामान) के लिए भेजना उनका अधिकार है।

क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि कुछ अधिकार सही हैं और कुछ गलत? कि कुछ अधिकार अच्छे हैं और कुछ खराब? सोच कर हमें लिखो।

एक

भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार

भारतीय संविधान भारतीय नागरिकों को छह मुख्य मौलिक अधिकार प्रदान करता है:

1. समानता का अधिकार
- (i) कानून के सामने समानता
- (ii) सामाजिक समानता
- (iii) राज्य की नौकरियों में सबको समान अवसर

2. स्वतन्त्रता का अधिकार
- (i) भाषण व विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता
- (ii) अस्त्र-शस्त्र के बिना शांतिपूर्ण सम्मेलन की स्वतन्त्रता
- (iii) संस्था एवं संघ बनाने की स्वतन्त्रता
- (iv) भारतीय भूमि पर भ्रमण व निवास की स्वतन्त्रता
- (v) व्यवसाय करने की स्वतन्त्रता
- (vi) जीवन की सुरक्षा तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता

3. शोषण के विरुद्ध अधिकार
- (i) मनुष्यों के खरीदने-बेचने पर रोक
- (ii) बेगार पर रोक
- (iii) बाल श्रम पर रोक

4. धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार
- (i) धर्मपालन एवं प्रचार की स्वतन्त्रता
- (ii) धर्म के मामलों के प्रबंध की स्वतन्त्रता
- (iii) धर्म विशेष की समृद्धि के लिए कर देने या न देने की स्वतन्त्रता

5. संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार
- (i) प्रत्येक वर्ग के लिए भाषा, लिपि एवं संस्कृति की सुरक्षा
- (ii) धर्म आदि के भेदभाव के बिना शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश
- (iii) धर्म व संस्कृति पर आधारित अल्प वर्गों को शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की स्वतन्त्रता
- (iv) प्रत्येक भाषा व लिपि से संबंधित विद्यालयों के प्रति राज्य की ओर से समान व्यवहार

6. संवैधानिक अधिकारों की रक्षा का अधिकार

तुम्हें क्या लगता है हमारे देश में प्रत्येक व्यक्ति या समूह को ये अधिकार प्राप्त हैं?

किसके पास या किस समूह के पास कितने और कौन से अधिकार हैं यह इस बात पर निर्भर करता है,किसके पास कितनी ताकत है। वास्तव में यहां 'जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली' बात है। ये लाठियां भी कई तरह की हैं- शारीरिक बल की लाठी, अक्ल की लाठी, धन की लाठी, सत्ता की लाठी, धर्म की लाठी, जाति की लाठी, लिंग की लाठी, उम्र की लाठी।

वास्तव में समाज में किसी भी व्यक्ति या समूह को अधिकार आसानी से नहीं मिलते उन्हें लड़-झगड़कर, संघर्ष करके लेना पड़ता है। यानी इन लाठियों से टकराना पड़ता है। और जब कोई एक समूह कुछ अधिकार हासिल कर लेता है तो दूसरा समूह कुछ अधिकार खो बैठता है। जैसे अगर तुम शाम को खेलने का अधिकार हासिल कर लो, तो तुम्हारे पिताजी तुमसे शाम को सामान मंगवाने का अधिकार खो बैठेगें।

अधिकार भी दो तरह के होते हैं। एक तरह के अधिकार ऐसे हैं जो कहीं लिखे नहीं होते बल्कि सामाजिक परंपराओं और प्रथाओं के जरिए स्थापित होते हैं। जैसे महिलाओं को पहले यह अधिकार नहीं था कि वे पढ़ें-लिखें। पर धीरे-धीरे समाज के विचारों में परिवर्तन आता गया और इस बात को मान्यता मिलती गई कि महिलाओं को भी पढ़ना-लिखना चाहिए या कि उन्हें भी पढ़ने-लिखने का अधिकार है। इस तरह के अधिकार 'मौखिक अधिकार' कहलाते हैं। दूसरे तरह के अधिकार 'लिखित अधिकार' होते हैं। ये कानूनी अधिकार होते हैं। हमारे देश के संविधान में लिखित अधिकारों की व्याख्या की गई है। जैसे हमारा संविधान कहता है कि हर नागरिक को जीवित रहने का अधिकार है (हालांकि संविधान यह नहीं बताता कि जीवित रहने के साधन कहां से जुटाएं)। संविधान में नागरिकों के छह मौलिक अधिकारों का उल्लेख किया गया है। (देखो बाक्स एक)

प्रत्येक राष्ट्र के अलावा दुनिया के सभी निवासियों के लिए कुछ समान अधिकार भी तय किए गए हैं। यह काम संयुक्त राष्ट्र संघ ने किया है। 1948 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस संबंध में एक घोषणा पत्र जारी किया, जो 'मानव अधिकारों का सार्वभौमिक घोषणा पत्र' के नाम से जाना जाता है। (देखो बाक्स दो)

यह तो हुई पूरे मानव समाज के अधिकार की बात। पर क्या बच्चों के लिए अलग से कुछ खास अधिकार होने चाहिए?

मैं तो कहूंगा कि ज़रूर! क्योंकि आमतौर पर बच्चों का दर्ज़ा समाज में सबसे नीचे होता है। खाने-पीने के लिए उन्हें अपने मां-बाप पर निर्भर रहना पड़ता है (और अगर मां-बाप गरीब हों तो भूखे भी रहना पड़ता है)। अपनी इच्छा

दो

मानव अधिकारों का सार्वभौमिक घोषणा पत्र

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सन् 1948 में यह घोषणा पत्र जारी किया गया। इसमें 30 बिंदु हैं। उनमें से कुछ खास-खास यहां दिए गए हैं-

1. सभी इंसान आज़ाद पैदा होते हैं और आत्मसम्मान व अधिकारों की दृष्टि से बराबर हैं।
2. जाति, रंग, लिंग, भाषा, धर्म, राजनैतिक विचार, राष्ट्र या समाज विशेष, संपत्ति, जन्म आदि किसी भी भेदभाव के परे इस घोषणा पत्र के अधिकार और आज़ादी सबके लिए हैं।
3. प्रत्येक को जीवन, आज़ादी और सुरक्षा का अधिकार है।
4. किसी को भी यातना या क्रूरता का शिकार नहीं बनाया जाएगा और न ही अमानवीय या अपमान जनक व्यवहार या सजा दी जाएगी।
5. गैर कानूनी ढंग से किसी को भी गिरफ्तार नहीं किया जाएगा और न ही देश निकाला दिया जाएगा।
6. कानूनी रुप से अपराध साबित होने तक किसी भी मुज़रिम को निर्दोष माना जाएगा। उसे अपने बचाव का पूरा अवसर दिया जाएगा।
7. किसी भी व्यक्ति के एकांत, परिवार, घर या पत्राचार में हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।
8. प्रत्येक व्यक्ति को उत्पीड़न से बचने के लिए दूसरे देशों में शरण मांगनें व लेने का अधिकार है।

क्या वास्तव में सभी लोग इन अधिकारों का उपयोग कर पाते हैं?

तीन

बाल अधिकारों का सार्वभौमिक घोषणा पत्र

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 20 नवम्बर, 1959 को यह घोषणा पत्र जारी किया गया। इसकी मुख्य बातें निम्नलिखित हैं-

1. बच्चों को विशेष सुरक्षा मिलेगी। उन्हें आज़ादी व आत्मसम्मान के वातावरण में अपने स्वास्थ्य व सामान्य शारीरिक, मानसिक , नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास के लिए उचित अवसर एवं सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।
2. प्रत्येक बच्चे को जन्म लेने के साथ ही एक नाम और राष्ट्रीयता का अधिकार होगा।
3. प्रत्येक बच्चे को सामाजिक सुरक्षा पाने का अधिकार होगा।
4. शारीरिक, मानसिक या सामाजिक दृष्टि से असहाय बच्चों को उनकी परिस्थिति के अनुकूल व्यवहार, शिक्षा व देखभाल दी जाएगी।
5. बच्चे को प्यार व समझदारी की जरुरत होती है। यथा संभव उसका लालन-पालन परिवार में ही होगा। विशेष परिस्थितियों के अलावा कम उम्र में बच्चे को मां से अलग नहीं किया जाएगा। ऐसे बच्चे जिनका परिवार नहीं है या जिनके पास पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं, उनकी देखभाल की जिम्मेदारी समाज व नागरिक अधिकारियों की होगी।
6. प्रत्येक बच्चे को शिक्षा का अधिकार है। कम से कम प्रारंभिक शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य होगी।
7. संकट कालीन परिस्थितियों में बच्चों को सबसे पहले सुरक्षा व राहत दी जाएगी।
8. प्रत्येक बच्चे को हर प्रकार की उपेक्षा, क्रूरता और शोषण से बचाया जाएगा।
9. बच्चों को जातीय, धार्मिक या अन्य प्रकार के भेदभाव बढ़ाने वाली प्रथाओं से बचाया जाएगा।

क्या सचमुच प्रत्येक बच्चे को ये अधिकार मिलते हैं?

के विरूद्ध स्कूल जाना पड़ता है। वहां न चाहते हुए भी बंद कमरे में किताब से नाक सटाकर सिर झुकाए घंटों पढ़ना पड़ता है। हर बड़े का हुक्म मानना पड़ता है और ना मानो तो मार खाओ, डांट खाओ। अब मैं इन सब बातों के बारे में क्या बताऊं तुम तो मुझसे ज्यादा जानते हो और लगभग हर रोज़ ऐसी स्थिति देखते होगे। इसलिए तुम्हीं कह सकते हो कि तुम्हें कौन से अधिकार मिलना चाहिए। वैसे अलग-अलग समय पर, अलग-अलग परिस्थितियों में, अलग-अलग ढंग से बच्चों ने अपने अधिकारों की बात उठाई है और हर रोज़ उठाते हैं। कुछ वयस्क लोगों ने भी बच्चों के अधिकारों पर अपने मत दिए हैं। किसी ने कहा कि बच्चों को यह अधिकार मिलना चाहिए कि वे साथ रहने के लिए अपना मनपसंद परिवार चुन सकें। किसी ने कहा कि वे खुद तय करें कि क्या पढ़ना चाहते हैं और किससे? और भी तमाम मत हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने बच्चों के लिए भी अधिकारों का एक घोषणा पत्र 20 नवंबर, 1959 को जारी किया है। (देखो बाक्स तीन)

इन सब अधिकारों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? लगता है मैंने बहुत सारे सवाल पूछ डाले, पर सवालों का उत्तर देना, नहीं देना तुम्हारा अधिकार है। ठीक है ना!

□ सत्यू षड़गी

सिक्का क्यों दिखा?

यह प्रयोग अपने दोस्त की मदद से करो। एक कटोरी में एक सिक्का रखो। कुछ दूर हटकर एक आंख बंद करके अपने सिर को इतना झुकाओ कि सिक्का दिखना बंद हो जाए। अपने सिर को उसी स्थिति में रखकर अब अपने साथी से कहो कि वह कटोरी में पानी डाल दे। पानी इस तरह डाला जाए कि सिक्का अपने स्थान से हिले नहीं। एक स्थिति ऐसी आएगी जब तुम्हें सिक्का दिखने लगेगा। सोचो यह कैसे संभव हुआ?

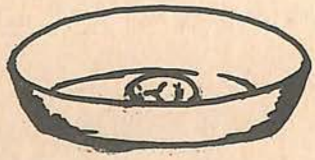

चलो हम ही एक संकेत देते हैं। हम जानते हैं कि किसी भी माध्यम में प्रकाश की किरणें सीधी रेखा में चलती हैं, परन्तु जब किरणें एक माध्यम (जैसे हवा) से दूसरे माध्यम (जैसे पानी) में जाती हैं तो अपवर्तित होती हैं। अब सोचो, यदि हम अपने प्रयोग में दोनों माध्यमों को एक-दूसरे से बदल दें यानि कटोरी के चारों तरफ पानी हो और कटोरी के अंदर हवा, तो क्या होगा? क्या तुम दोनों स्थितियों में प्रकाश की एक किरण के पथ का चित्र बनाकर बात स्पष्ट कर सकते हो?

(सामग्री होविशिका बालवैज्ञानिक कक्षा आठ खंड 2 से साभार)

डिब्बा कैसे मुड़ा?

टीन का एक छोटा ऐसा डिब्बा लो जिसका ढक्कन अंदर से बंद होता हो (जैसे, वनस्पति घी, दूध पावडर का डिब्बा)। इस डिब्बे में थोड़ा-सा पानी भरकर खौला लो। फिर सावधानी से उसका ढक्कन कसकर लगा दो। ध्यान रखना, हाथ न जले। अब इस डिब्बे पर ढेर सारा ठंडा पानी उड़ेल दो। थोड़ी देर प्रतीक्षा करो और देखो कि क्या होता है? डिब्बा ऐसा हो जाएगा जैसे किसी ने उसे हथौड़े से दौंच दिया हो। सोचो ऐसा क्यों होता है?

गोताखोर गोली

जरूरी सामान: *खाने का सोड़ा (सोडियम बाइ कार्बोनेट), नींबू, डामर की गोली (नैफ्थालीन)*

एक बड़े कटोरे या कांच की बोतल में एक चम्मच खाने का सोड़ा पानी में घोल लो। अच्छी तरह घुल जाने के बाद उसमें ऊपर से नींबू का रस निचोड़ दो। ऐसा करने पर उसमें से बुलबुले निकलने लगेंगे। जैसे ही बुलबुले निकलना शुरू हों तीन-चार डामर की गोलियां उसमें डाल दो। पहले तो ये गोलियां डूब जाएंगी। पर थोड़ी देर बाद अपने आप एक-एक करके ऊपर तैरने लगेंगी। थोड़ी देर बाद फिर डूब जाएंगी। अब गोलियों का डूबने-तैरने का यह सिलसिला काफी देर तक चलता रहेगा। है न मजेदार गोताखोर!

पर कहीं इसे तुमने कोई चमत्कार तो नहीं समझ लिया? वास्तव में यह कोई चमत्कार नहीं है, विज्ञान का ही एक सरल प्रयोग है। इसके पीछे क्या राज़ है उसे ढूंढने की कोशिश करो।

एक बात और, डामर की गोलियां आमतौर पर कपड़े रखने वाले बक्सों में डाली जाती हैं ताकि कपड़ों में कीड़े न लगें। डामर की गोलियों को अपने छोटे भाई-बहनों से दूर रखना।

पहेलियां

कच्ची में खट्टी लस्सी हूं
पकने पर खट-मिट्ठी
पीती हूं वर्षा का पानी
खाती जड़ से मिट्टी।

ooo ooo

उर्द, कपास, कुसुम और ककड़ी
इन चारों की एक ही लकड़ी

ooo ooo

चीकन-चीकन गोल-गोल
तरे छिदक्का ऊपर बाल।

ooo ooo

लोग उड़ेंगे

यह एक अफ्रो-अमरीकी लोककथा है। करीब चार सौ वर्ष पहले अफ्रीका के लाखों निवासियों को जबरन पशुओं की तरह जहाजों में लादकर अमरीका ले जाया गया था। वहां उन्हें गुलाम बनाकर रखा गया। इस गुलामी से मुक्त होने के लिए अफ्रीकी मूल के अमरीकी नागरिकों ने कई लड़ाईयां लड़ीं। आखिरकार 1862 में उन्हें दासप्रथा से मुक्ति मिली।

इस कहानी में 'उड़ते लोगों' से उन साहसी व्यक्तियों की ओर संकेत है, जिन्होंने अपने 'मालिकों' और उनके कंरिदों के विरुद्ध विद्रोह किया और न उड़ पाने वाले वे हैं जो वर्षों तक गुलाम बने रहे।

यह कहानी मूलरूप से वर्जीनिया हैमिल्टन द्वारा कही गई। चकमक के लिए इसे लाल्टू ने अंग्रेजी से अनूदित किया। चित्र कैरन ने बनाए हैं।

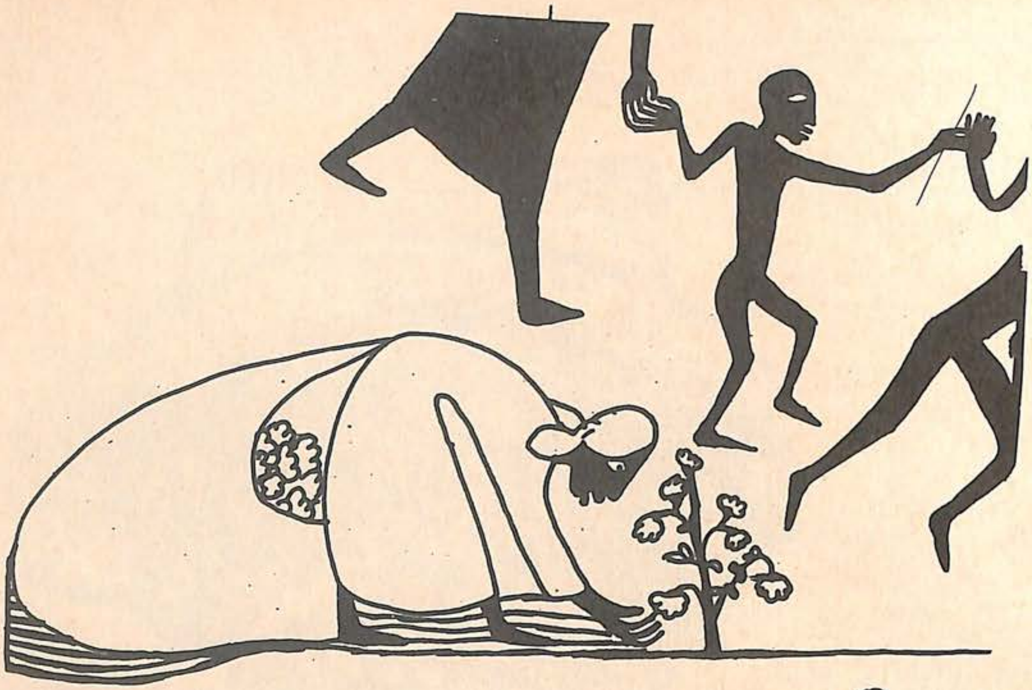

कहते हैं लोग उड़ सकते हैं। कहते हैं सदियों पहले अफ्रीका में कुछ लोग जादू में माहिर थे। वे हवा में इस तरह उठ जाते थे जैसे किसी पेड़ पर चढ़ रहे हों। कभी उन्हें खेतों के ऊपर पक्षियों-सा उड़ते देखा जाता। उनके काले पंख नीले आकाश पर फड़फड़ाते और उनकी चमक दूर तक फैलती।

फिर एक दिन ऐसा आया कि कई लोग गुलाम बना लिए गए। उन्हें जहाजों पर लाद कर समुद्र पार ले जाया जाने लगा। वह भी एक कहानी है। उन्हें अपने पंखों को समुद्र पार जहाजों में ले जाना मना था। उड़ने वालों के पंख गिर गए।

फिर बड़े बुरे दिन आए। समुद्री तूफान से लोग बीमार पड़ गए। जब धीरे-धीरे अफ्रीका की सुगंध उनसे छूट गई, वे उड़ने की बात भूल गए। पर कहते हैं कि उड़ने वाले लोगों के पास पुरानी क्षमता रह गई, यद्यपि उनके पंख गिर चुके थे। गुलामी की ज़िंदगी में भी वे अपनी गुप्त शक्ति नहीं खोए। देखने में वे अफ्रीका से आ रहे दूसरे काले लोगों से अलग नहीं थे। धीरे-धीरे उड़ने वालों और न उड़ने वालों में कोई फर्क न रहा।

उड़ सकने वालों में एक बूढ़ा व्यक्ति था, मान लो उसका नाम था टोबी। एक लंबी, पर घबराई-सी औरत भी थी, जिसके पास कभी अपने पंख थे, मान लो उसका नाम था सेरा। सेरा की एक बच्ची भी थी,

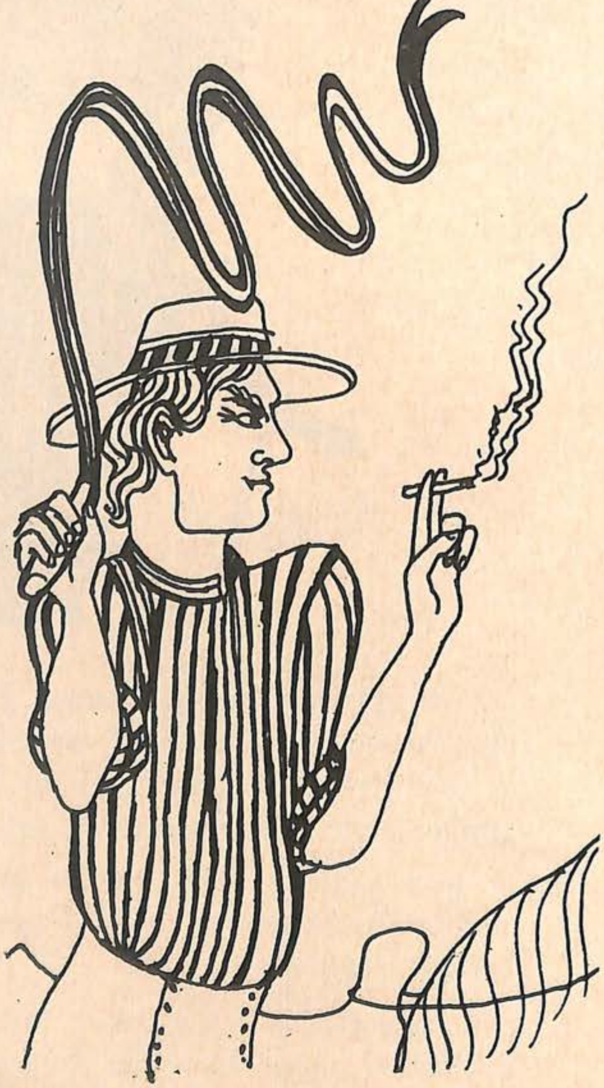

जिसे वह पीठ पर बांधे रखती। सेरा इस कठिन परिश्रम और नफरत भरी ज़िंदगी से बहुत परेशान थी।

सूरज उगने से अस्त होने तक गुलामों को खेतों में काम करना पड़ता। गुलामों का मालिक खुद को उनका मास्टर कहता। वह तो मानो चट्टान था, या कोई बड़ा भद्दा पथरीला कोयला। बहुत बड़ा पत्थर सा न हिलने वाला। गुलामों के काम की निगरानी के लिए उसने एक ओवरसीयर तैनात किया था, जो घोड़े पर बैठकर निगरानी करता था। ड्रायवर नाम का एक व्यक्ति धीमे काम करने वाले लोगों को चाबुक से पीटता रहता था ताकि वे तेजी से काम करें। चाबुक की मार से दर्द की एक लहर चमड़ा फाड़ कर अंदर चली जाती। लोग तेज़ी से काम करने लगते। और वे कर भी क्या सकते थे!

सेरा खरपतवारों को कुदाल से अलग करती, फसलों की कतारें बनाती और उसकी बच्ची पीठ पर सोती।

कभी अगर बच्ची को भूख लग जाती तो वह जोरों से चिल्लाती। सेरा काम छोड़कर उसे दूध नहीं पिला पाती। उसे प्यार करने या पुचकारने के लिए भी काम छोड़ने की इजाज़त नहीं थी। बच्ची रोती रहती। न चाहते हुए भी उसे यह सहना पड़ता। ऐसी पीड़ा सहने लायक दिल उसके पास न था।

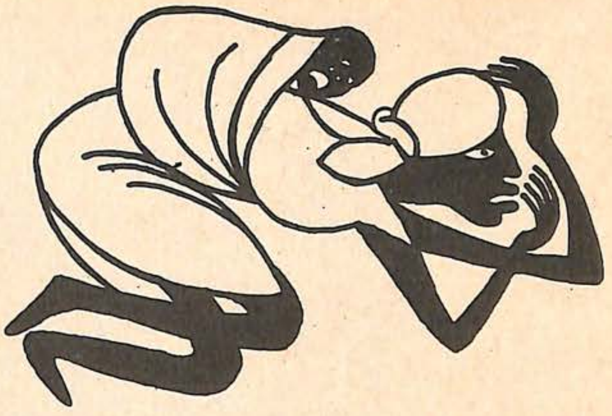

एक बार ओवरसीयर चीख पड़ा, 'चुप कराओ इसे!'

सेरा ने दया प्रार्थना की। फिर भी ड्रायवर ने आकर उस बच्ची पर जोर से चाबुक मारी। बच्ची घायल हो पागल सी चीखी और उसकी मां सेरा ज़मीन पर गिर पड़ी।

फिर वह बूढ़ा टोबी आया और उसने हाथ पकड़कर उसे उठाया।

"मुझे जाना ही पड़ेगा।" सेरा ने कहा।

"समय आ गया है।" टोबी बोला।

सेरा सीधी खड़ी नहीं हो पा रही थी। उसका सिर चकरा रहा था। धूप से चेहरा तमतमा रहा था। बच्ची रोए जा रही थी और मानो यह कह रही थी,

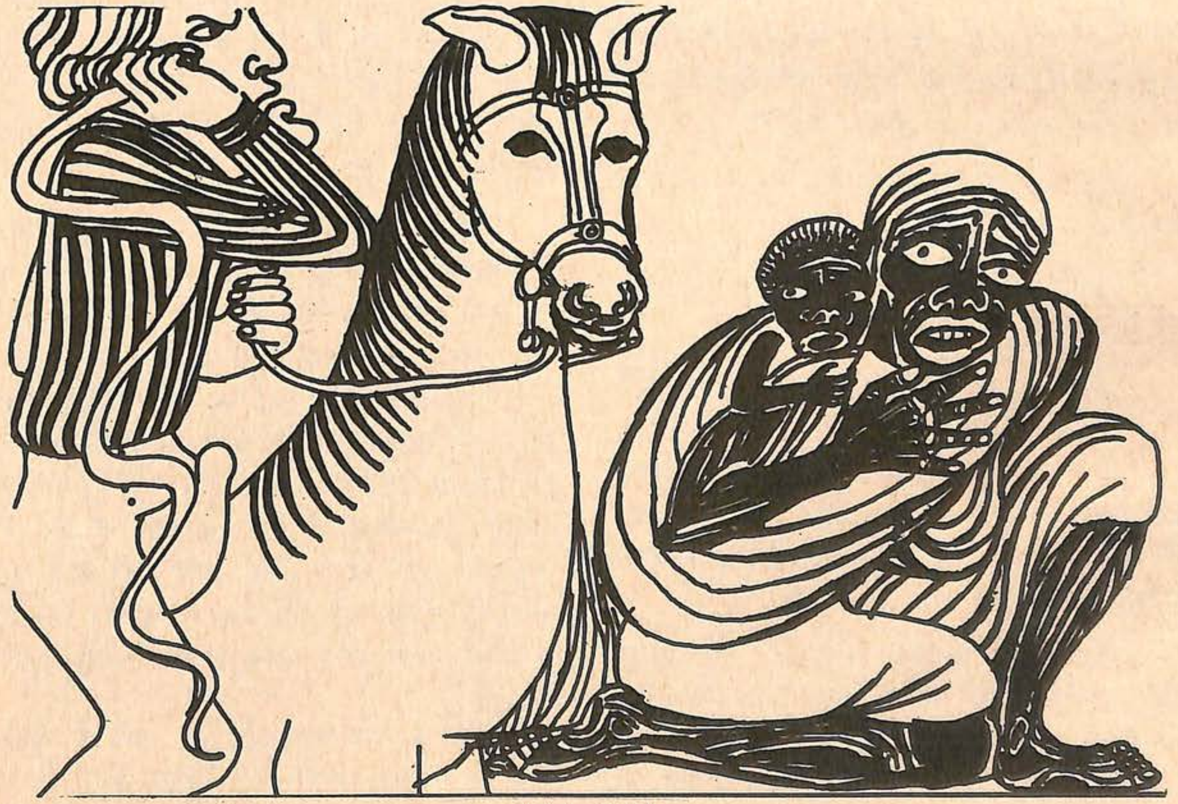

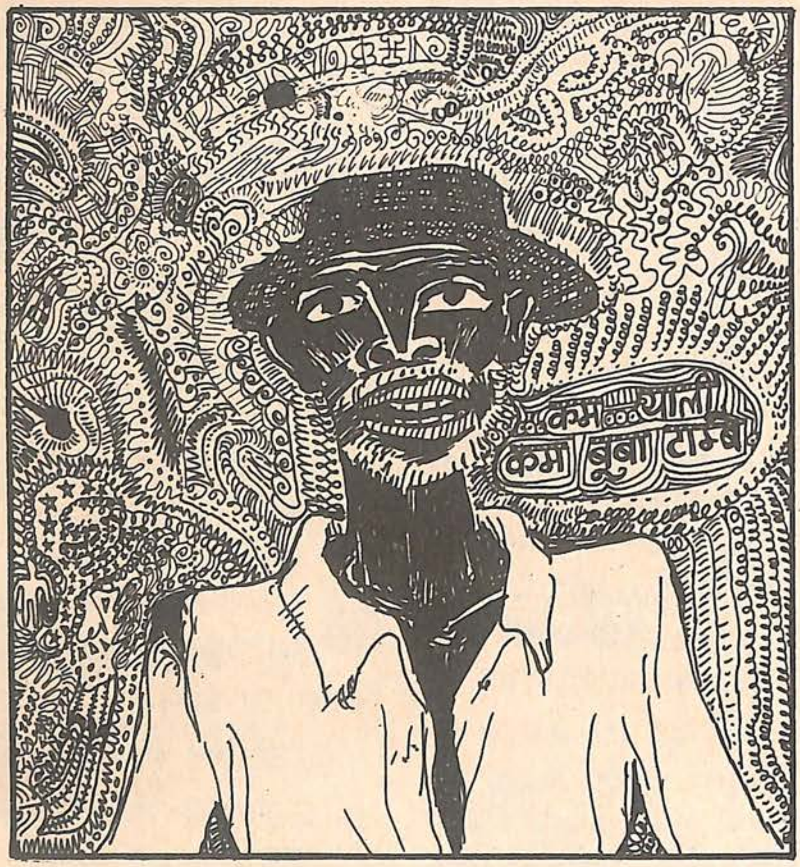

'दया करो, हाय, मुझ पर दया करो।' सेरा को बहुत तकलीफ हो रही थी और भूख भी लग रही थी। वह कतार पर बैठ गई।

"ऐ....ऐ....उठ....वहां से।" ओवरसीयर चिल्लाया। उसके हाथ के संकेत से ड्रायवर की चाबुक सेरा के पैरों पर जा पड़ी। उससे उठा न गया।

टोबी के अलावा सेरा और उसकी बच्ची की मदद करने वाला वहां कोई न था।

"अब नहीं सहा जाता।" सेरा ने तड़पते हुए टोबी से कहा।

"हां बेटी, समय आ गया है", टोबी बोला, "जाओ, तुम तो जानती ही हो कैसे उड़ना है।"

उसने अपने हाथ उठाए और सेरा ने उन्हें पकड़ा। फिर जल्दी से उसने, 'कुम.... याली, कुम बूबा तांबे' और कुछ अन्य शब्द बुदबुदाए। लगा जैसे वे कानाफूसी कर रहे हों या लंबी सांसें ले रहे हों।

सेरा ने एक पैर हवा में उठाया। फिर दूसरा। पहले उसे उड़ने में कठिनाई हुई। उसने बच्ची को मजबूती से बाहों में थाम रखा था। अफ्रीका के जादू ने उस पर असर करना शुरू कर दिया। स्वच्छंद एक चिड़िया-सी वह ऊपर को उठी। बिलकुल एक पंख-सी हल्की।

ओवरसीयर ने चीखते हुए उसका पीछा किया। सेरा खेतों की बाड़ों के ऊपर से उड़ चली। लंबे पेड़ों से भी उसकी उड़ान न रुकी। ओवरसीयर उसे न रोक सका। वह एक चील सी उड़ती रही। और आखिर वह ओझल हो गई।

किसी ने इस बारे में कोई बात नहीं की। किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था। पर आश्चर्य यह कि उन सबने उसे उड़ते देखा था।

अगले दिन काफी गरमी पड़ी। गरमी से गुलामों में से एक युवक थक कर गिर पड़ा। ड्रायवर आया और उसने चाबुक चलाई। टोबी ने आकर गिरे हुए उस युवक से कुछ शब्द कहे, जो अब किसी को स्पष्ट याद नहीं हैं। वह युवक भी सुनने के क्षण भर बाद उन्हें भूल चुका था। पर वे शब्द उसके अंदर कहीं पहुंच गए। वह युवक उठा और हवा में उछला। फिर हवा पर सवार, चलता चला। अंत में वह भी सेरा की तरह उड़ गया।

एक के बाद एक कई लोग गरमी से थककर गिरते रहे। टोबी सबकी मदद करता रहा। वह उन

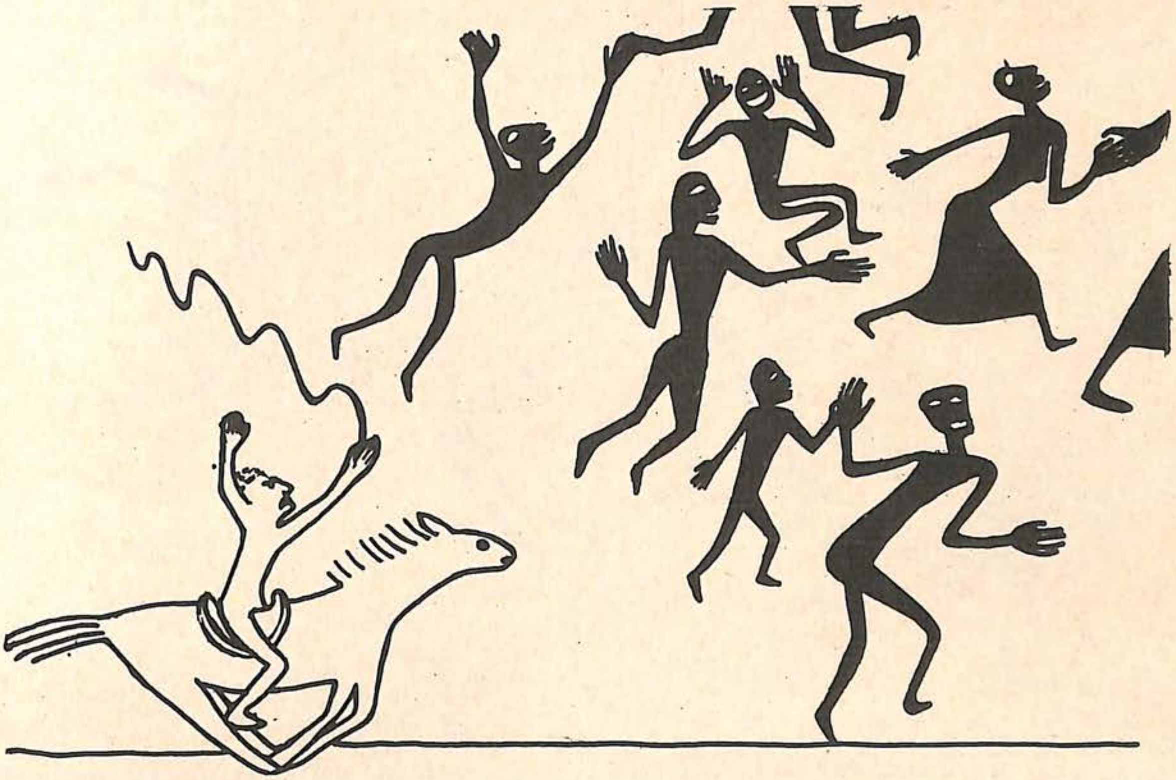

सबकी तरफ अपने हाथ बढ़ाता और कुछ शब्द बुदबुदाता, 'कुंम कुंका याली, कुम बुबा तांबे।' कानाफूसी और फिर एक लंबी सांस! और फिर वे उड़ जाते। गरम हवाओं पर चढ़, काली चमकती लकड़ियों की काठियों से दीखते वे उड़ते गए और नीचे ओवरसीयर उनका पीछा करता रहा, चीखते हुए। उड़ने वाले कतारों को, खेतों को और नदियों को पार करते उड़ गए।

एक दिन ओवरसीयर चीख पड़ा, 'पकड़ो इस बूढ़े को—मैंने इसे अपने होंटों पर कुछ बुदबुदाते सुना है, पकड़ो इसे।' फिर मास्टर नाम का वह व्यक्ति दौड़ता हुआ आया। ड्रायवर ने टोबी को बांधकर मारने के लिए चाबुक सम्हाली। गुलामों के मालिक ने अपनी छोटी बंदूक निकाली। वह उस बूढ़े अफ्रीकी टोबी को खत्म करना चाहता था।

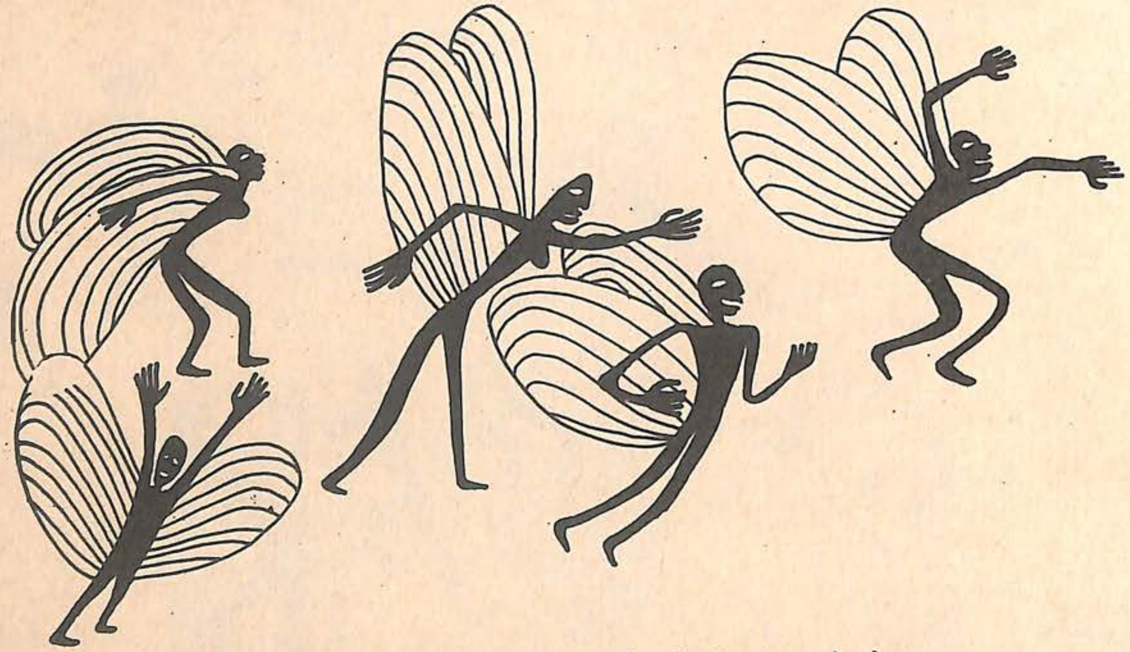

टोबी हंसता रहा। कहते हैं उसने जोर से अपना सिर हिलाते हुए कहा, 'ही, ही! तुम्हें अब पता चलेगा मैं कौन हूं। इस खेत में काम करने वालों में से कईयों को तुम आज पहचान पाओगे। उनके ताकते चेहरों पर उसने कहा, 'हम उड़ने वाले हैं।'

फिर उन प्राचीन शक्तिशाली शब्दों को उसने दोहराया। उस खेत में चारों ओर जितने भी लोग चाबुक से सहमे खड़े थे, सबको सुनाते हुए उसने कहा, '....बुबा याली, ...बुबा ताबें....!'

फिर तो बस हल्ला ही मच गया। झुकी रीढ़ें सीधी हो गईं। गुलाम कहलाने वाले बूढ़ों और जवानों में वे सभी जो उड़ सकते थे, उन्होंने हाथ पकड़े। लगा जैसे वे घूम-घूम कर गाएंगे। पर वे न तो घेरे में घूम रहे थे, न उन्होंने कोई गाना गाया। वे हवा में उड़ गए। एक झुंड बन वे उड़ते रहे। नीले आकाश में वह झुंड एक काला आकार सा बनता चला गया। जैसे काले कौए या काली छायाएं एक साथ उड़ रही हों। इतनी ऊंचाई तक उड़ ग़ए वे कि फिर उनका आकार भी न रहा। उस खेत के कहीं ऊपर, उस गुलामी से कहीं ऊपर, स्वतंत्रता की दुनिया में उड़ गए वे।

बूढ़ा टोबी भी उनके पीछे उड़ा। वह उनकी निगरानी करता रहा। अब उसकी आंखों में न तो आंसू थे—न होंटों पर हंसी, वह भविष्य दृष्टा था। उसकी आंखें न उड़ सकने वाले उन गुलामों पर पड़ी जो अभी भी खेत पर खड़े थे।

'हमें साथ ले चलो' उनकी आंखें कह रही थीं। पर वे डर से कह नहीं पा रहे थे। टोबी ने उन्हें पीछे छोड़ दिया। उन्हें उड़ना सिखाने का वक्त ही नहीं मिला उसे। उनके लिए अब बस, कभी भाग जाने का अवसर ही रह गया था।

बूढ़े टोबी ने उन्हें अलविदा कहा और करुणा से उनकी ओर देखा, फिर वह और ऊपर उड़ गया।

ऐसी है उनकी कहानी। ओवरसीयर ने यह घटना दूसरों को सुनाई। मास्टर नाम के व्यक्ति ने कहा, 'यह सब झूठ है, प्रकाश का कोई चमत्कार था।' ड्रायवर ने किसी से कुछ न कहा।

उड़ न पाने वाले गुलामों ने उड़ गए लोगों के बारे में अपने बच्चों को बताया। एक दिन वे भी आज़ाद हो गए—तब ये कहानियां उन्होंने कहीं।

स्वाधीन देश में आग के पास बैठ निर्भय होकर उन्होंने ये सब बातें बतलाईं। उन्हें बिना किसी डर के आग के सामने बैठना, स्वाधीनता और कहानियां सुनाना खूब भाता था।

कहते हैं इन बच्चों ने बड़े होकर अपने बच्चों को यह कहानी सुनाई। अब मैं भी तुम्हें सुना रहा हूं। ●

अब तुम्हीं कहो, हमारे देश में गरीबी और ऐसे अत्याचार में जकड़े हुए करोड़ों देशवासी कब और कैसे उड़ पाएंगे? इस पर सोच कर अगर कुछ लिखना चाहो तो हमें ज़रूर भेजना।

कोयल किसके लिए गाती है?

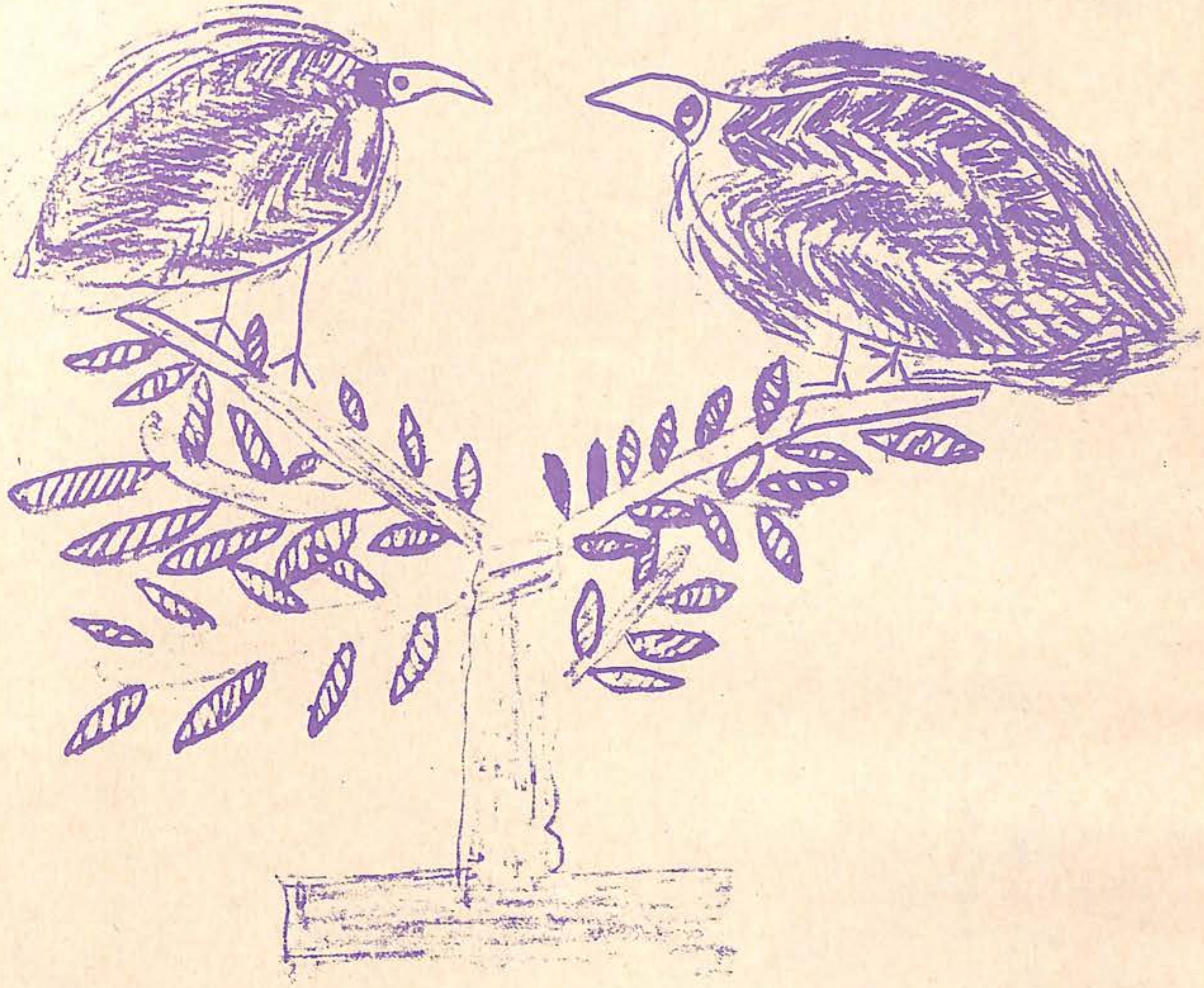

एक जंगल था। उस जंगल के एक पेड़ पर बैठी कोयल अपनी सुरीली आवाज में गा रही थी। उसकी सुरीली आवाज सुनकर कुछ पक्षी उस जगह पहुंच गए। पक्षियों ने पूछा, 'तुम क्यों गा रही हो?' तो कोयल ने जवाब दिया, 'मैं अपने लिए गा रही हूं। मैं बिना गाए नहीं रह सकती। मुझे गाना अच्छा लगता है।' यह सुनकर पक्षियों ने उसे वहां से भगा दिया।

तब वह कोयल कुछ दूर जाकर एक दूसरे पेड़ पर बैठ गई। वहां एक दूसरी कोयल बैठी थी। दूसरी कोयल ने पूछा, 'तुम उदास क्यों हो?' पहली कोयल ने पूरा किस्सा बताया। दूसरी कोयल ने कहा, 'तुमने गलत जवाब दिया। उन्होंने मुझसे भी यही पूछा था। मैंने कहा कि मैं तो तुम्हें सुनाने के लिए गा रही हूँ। तुम्हें खुश करने के लिए गा रही हूं।'

□ मनोज कुमार, आठवीं, चौरई

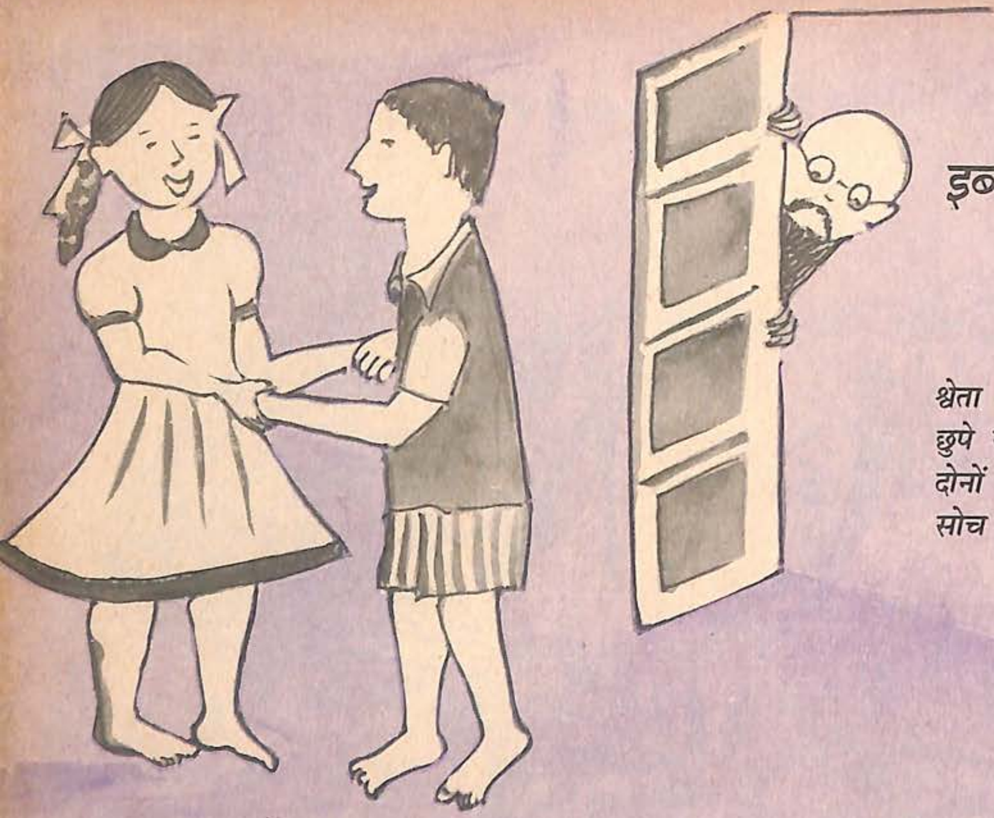

श्वेता, पमपम
और
इब्न बतूता की कविताएं

॥ एक ॥

श्वेता पमपम खेल रहे हैं
छुपे खड़े हैं इब्न बतूता
दोनों को चौंकाना है एकदम
सोच रहे हैं इब्न बतूता

श्वेता पमपम चालाक बड़े हैं
समझ गए हैं चालाकी
चुपचाप खिसक गए दोनों
बचे बतूता बाकी

॥ दो ॥

रूठी श्वेता को कौन मनाए
किसका है यह बूता
सिर पकड़ कर बैठ गए हैं
अपने इब्न बतूता

पमपम जी की सालगिरह है
श्वेता जी खिसियाईं
हमको मिलती डांट डपट
उनको दूध मलाई

पमपम जी ही बोले आखिर
रूठी क्यों हो दीदी
मैं तुम्हारा भैया छोटा सा
बात है इतनी सीधी

मिलजुल कर खाने में समझो
दीदी अपनी भलाई है
फिर चाहे वह डांट डपट हो
चाहे दूध मलाई है

॥ तीन ॥

श्वेता पमपम कित्ता पानी,
पूछ रहे हैं इब्न बतूता
पार करेंगे नदिया गहरी
पहन के जापानी जूता

दोनों चुप हैं क्यों बोलेंगे
नदिया का भेद
भला क्यों खोलेंगे
डूबें डूबें उनकी बला से
बतूता जी,
जब मांगा था तब दिया नहीं
क्यों जूता जी

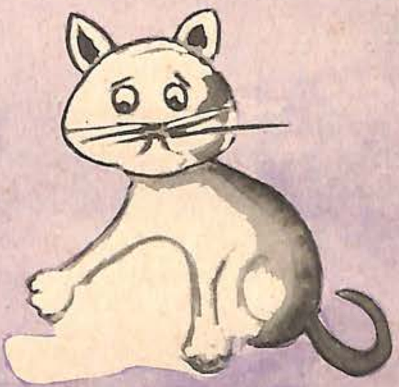

॥ चार ॥

काली काली आंखों वाली
बिल्ली लेकर आए इब्न बतूता
श्वेता पमपम खुश होकर
बैठ गए पहनाने जूता

बिल्ली थी शैतान, दांत तेज थे उसके
पंजों से रगड़ रगड़ कर फाड़ दिया जूता

गुर गुर गुर्राई थोड़ा सा
और भागी सरपट
सर पकड़ कर रोते बैठे
अपने इब्न बतूता

॥ पांच ॥

इब्न बतूता से बोले इक दिन अपने पमपम जी
जल्दी से इक कविता लिखना और वह भी बढ़िया सी

इब्न बतूता बैठे सोच रहे हैं अब कैसे क्या लिखना
कवि जैसा दिखने से मुश्किल सचमुच कविता लिखना

□ राजेन्द्र शर्मा

लोमड़ी हार गई!

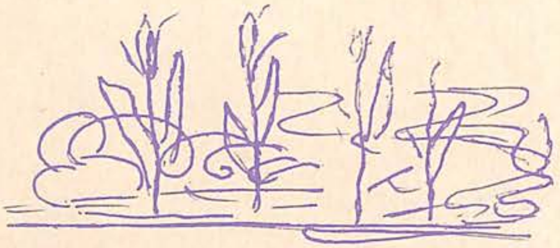

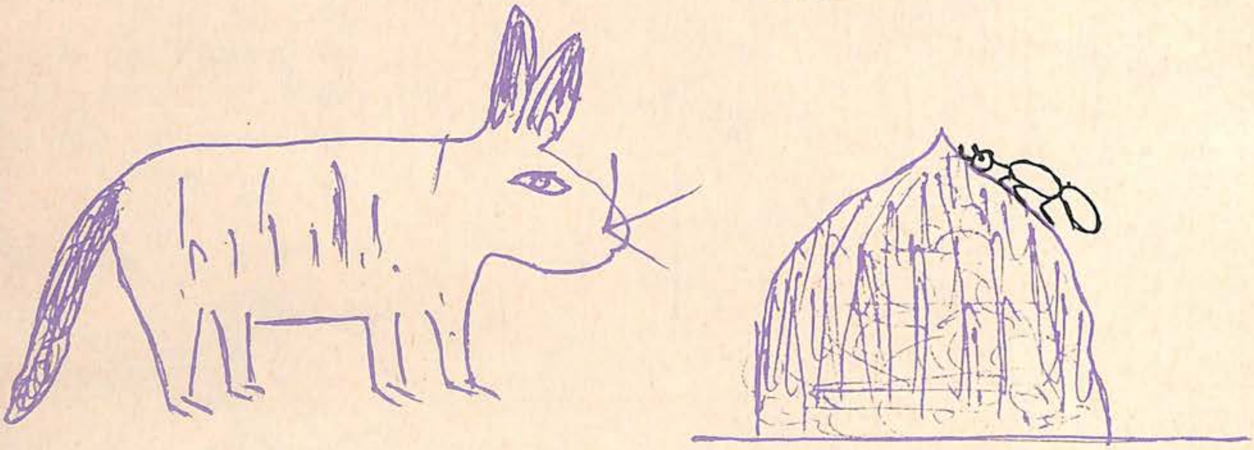

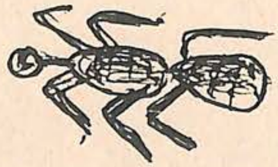

एक लोमड़ी और चींटा ने मित्र बनने का निर्णय किया और मिलकर गेहूं बोया। हर रोज चालाक लोमड़ी पेट दर्द की शिकायत करती और मौज करती। चींटा अकेला सुबह-शाम मेहनत करता। गेहूं पककर तैयार हो गया।

लोमड़ी ने तय किया कि चींटे को धोखा देकर सारा अनाज ले जाएगी। उसने चींटे से कहा, 'दोस्त इस गेहूं का बंटवारा क्यों करें। अच्छा होगा कि हम लोग दौड़ लगाएं, जो पहले खलिहान पहुंच जाए वह पूरा अन्न ले ले। चींटा तैयार हो गया।

लोमड़ी और चींटा अगल-बगल खड़े हो गए। लोमड़ी चिल्लाई 'एक, दो, तीन।' लोमड़ी पूरा जोर लगाकर दौड़ी। चींटा लोमड़ी की दुम में चिपक गया। खलिहान में पहुंचकर लोमड़ी ने अपनी दुम जोर से हिलाई। चींटा छिटक कर गिर गया और गेहूं के ढेर पर चढ़ गया। चींटा चिल्लाया, 'लोमड़ी तुम कहां रह गईं थीं। मैं कब से आ गया हूं।'

लोमड़ी हक्की-बक्की रह गई। चींटा सारा गेहूं ले गया और लोमड़ी भूखी घूमती रही।

☐ देवाशीश, दस वर्ष, बस्तर

कहानी, नाक की

यदि मैं तुम्हारे चेहरे पर न होती तो तुम्हारा चेहरा बदसूरत लगता और तुम्हें अपना मुंह छुपाना पड़ता। आखिर, मैं तुम्हारी नाक हूं। शायद इसीलिए 'नाक कट गई' मुहावरे की उत्पत्ति हुई होगी। क्या तुम्हें पता है मैं कितने सारे काम करती हूं। आओ, तुम्हें अपने बारे में कुछ बताऊं!

मेरे दो मुख्य काम हैं- सांस लेने में सहायता करना और सूंघना। मेरे दो छेदों में से होकर हवा फेफड़ों में पहुंचती है। इन छेदों को नासाछिद्र (नकुए) कहते हैं। लेकिन मैं केवल हवा के आने-जाने का साधारण रास्ता ही नहीं हूं। मैं फेफड़ों में जाने वाली हवा को साफ और नम करती हूं, साथ ही साथ उसका तापक्रम भी नियंत्रित करती हूं। वातावरण की हवा में धूल और धुएं के कण तथा कीटाणु होते हैं। यदि ये सब फेफड़ों में पहुंच जाएं तो फेफड़े कुछ ही दिनों में बीमार हो जाएंगे और काम करना बंद कर देंगे। धूल और कीटाणुओं को मैं दो प्रकार से हटाती हूं। मेरी भीतरी दीवार पर कई बाल होते हैं जो इन्हें फंसा लेते हैं। जो धूल के कण और कीटाणु बालों से बच के निकल जाते हैं वे मेरी भीतरी दीवार से निकलने वाले चिपचिपे पदार्थ (जिसे श्लेष्मा कहते हैं) में फंस जाते हैं। श्लेष्मा लगातार बनता रहता है और उसमें धूल-धक्कड़ फंसता ही रहता है। सोचो यह सब कहां जाता होगा? मेरे भीतर बालों के समान लाखों सूक्ष्म रचनाएं (रोमक) होती हैं। ये श्लेष्मा को पीछे की ओर बहा कर मुंह में पहुंचा देती हैं। यह मुंह से गले में और गले से पेट में चला जाता है। आमाशय में उपस्थित अम्ल के कारण श्लेष्मा में फंसे हुए कीटाणु मर जाते हैं।

फेफड़ों को शुद्ध हवा तो चाहिए ही, इसके अलावा यह भी जरूरी होता है कि उनमें जाने वाली हवा में पर्याप्त नमी हो और वह अधिक ठंडी या गरम न हो। वर्षा के दिनों में तो हवा में नमी रहती है, लेकिन गरमी और ठंड के दिनों में बाहर की हवा खुश्क होती है। इसे नम बनाने का काम मेरा श्लेष्मा करता है।

मेरी भीतरी दीवार की झिल्ली बहुत पतली होती है। इसमें रक्त कोशिकाओं का जाल बिछा रहता है। जब फेफड़ों में जाने वाली हवा इस जाल पर से गुजरती है तो उसका

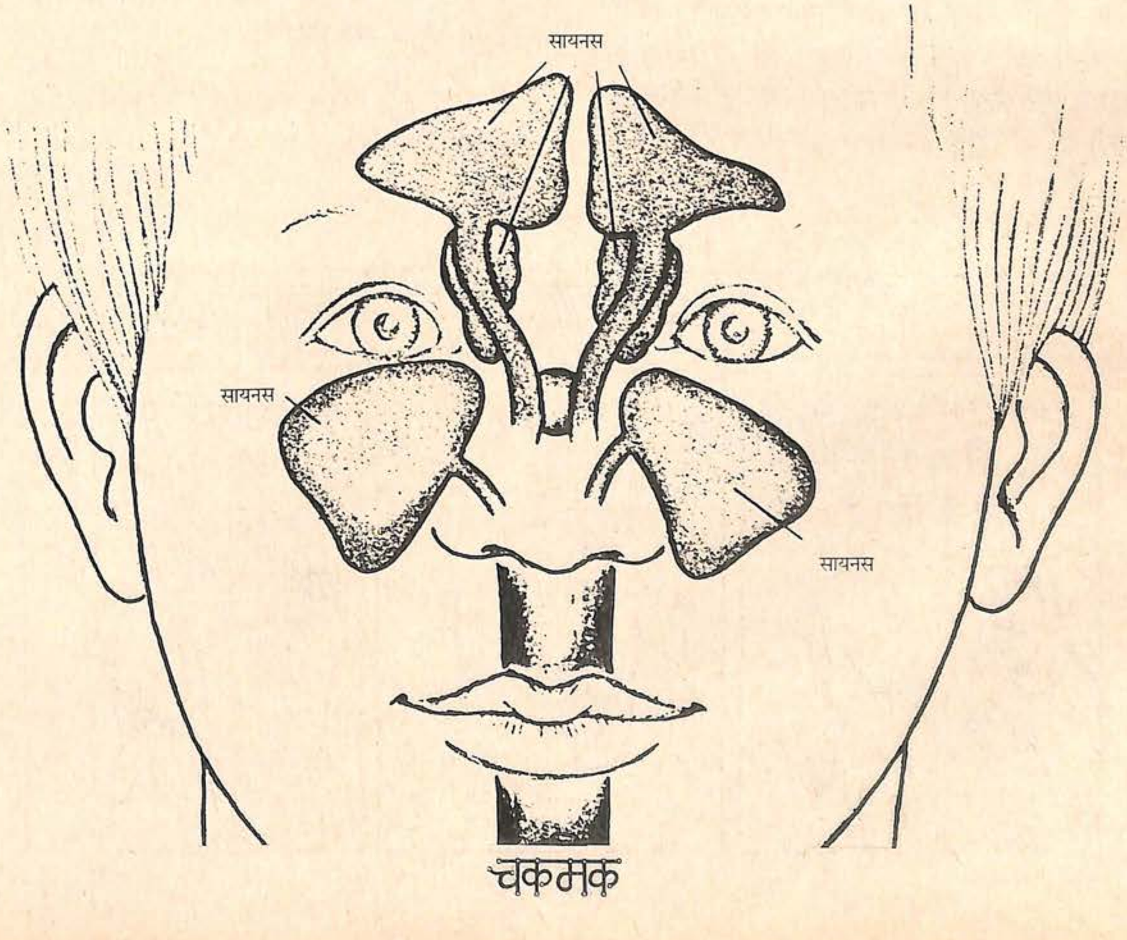

तापक्रम फेफड़ों की आवश्यकतानुसार अधिक या कम हो जाता है। इसे मेरा कमाल ही मानो कि मैं गरम हवा को ठंडी और ठंडी हवा को गरम कर सकती हूं।

यह तो हुई सांस लेने की बात! जहां तक सूंघने का सवाल है, इसमें भी मेरा रोल कमाल का है। मेरी सहायता से तुम लगभग 4000 प्रकार की अलग-अलग गंध पहचान सकते हो। जरा सूंघो तो तुम्हारी रसोई में क्या पक रहा है। वास्तव में यदि तुम खाने की खुशबू न ले सको तो स्वाद भी नहीं ले पाओगे। तुम्हें याद होगा कि जुकाम होने पर, सूंघने की शक्ति कम हो जाती है और खाना बेस्वाद लगता है। खाने का कोई पदार्थ जब खराब हो जाता है तो तुम्हें उसकी बदबू से पता चल जाता है और तुम उस संभावित बीमारी से बच जाते हो जो तुम्हें खराब पदार्थ के खाने पर हो सकती थी।

इन दो मुख्य कामों के अलावा मैं कई अन्य छोटे-छोटे काम भी करती हूं। तुम्हारी आवाज़ यदि अच्छी है तो मेरे ही कारण। जरा उंगलियों से मुझे कसकर दबाओ और फिर बोलने की कोशिश करो। अब कैसी लगी अपनी आवाज़?

रात को तुम तो सोते रहते हो पर मैं बराबर जागती रहती हूं। यदि तुम रात भर एक ही करवट सोते रहो तो सवेरे उठने पर तुम्हारे उस बाज़ू की पेशियां दर्द करने लगेंगी। इससे भी मैं तुम्हें बचाती हूं। जब तुम एक करवट के बल लगभग दो घंटे सो लेते हो तो मेरी उस ओर की नासिका बंद हो जाती है। मैं चुपचाप मस्तिष्क को संदेश भेज देती हूं। मस्तिष्क पेशियों को संदेश भेज कर तुमसे करवट बदलवा लेता है। यह सब तुम्हारी नींद में दखल दिए बिना ही चुपचाप हो जाता है।

इन सब कामों के लिए मेरी रचना भी अजीब-सी है। मेरा मुख्य भाग एक कमरा नुमा है जो तुम्हारे मुंह की ऊपरी मंजिल पर है। यह स्थान खड़ी दीवार के द्वारा दो भागों में बंटा हुआ है। दोनों भाग एक-एक नासा छिद्र द्वारा तुम्हारे चेहरे पर खुलते है। पीछे की ओर दोनों भाग मुंह के पिछले हिस्से से और कानों के भीतरी भाग से जुड़े रहते हैं। प्रत्येक भाग खोपड़ी की हड्डियों में स्थित चार खोखले स्थानों से जुड़ा रहता है। जिन्हें अंग्रेजी में सायनस कहते हैं।

मुझ पर मुसीबतें भी कम नहीं आतीं। जब अधिक ठंडी हवा मुझमें आती है तो श्लेष्मा को पीछे की ओर बहाने वाले रोमक अपना काम बंद कर देते हैं और श्लेष्मा नासा छिद्रों से बाहर टपकने लगता है। ऐसे में तुम कहते हो, "नाक टपक रही है"। जुकाम होने पर जब जोर लगाकर मुझे छिनकते हो तब मुझे बड़ी परेशानी होती है। इससे मेरी कोमल कोशिकाओं को तो धक्का लगता ही है, कीटाणुओं के साइनस और कान में पहुंच जाने का खतरा भी पैदा हो जाता है। तुम्हें याद होगा कि कभी-कभी जुकाम होने पर कान में खुजली होने लगती है। नाक से कीटाणुओं के कान तक पहुंचने पर ही ऐसा होता है।

तो भई, अपनी नाक संभाल कर रखो फिर मत कहना मेरी नाक कट गई।

('आई एम जोज बॉडी' से रुपांतरित)

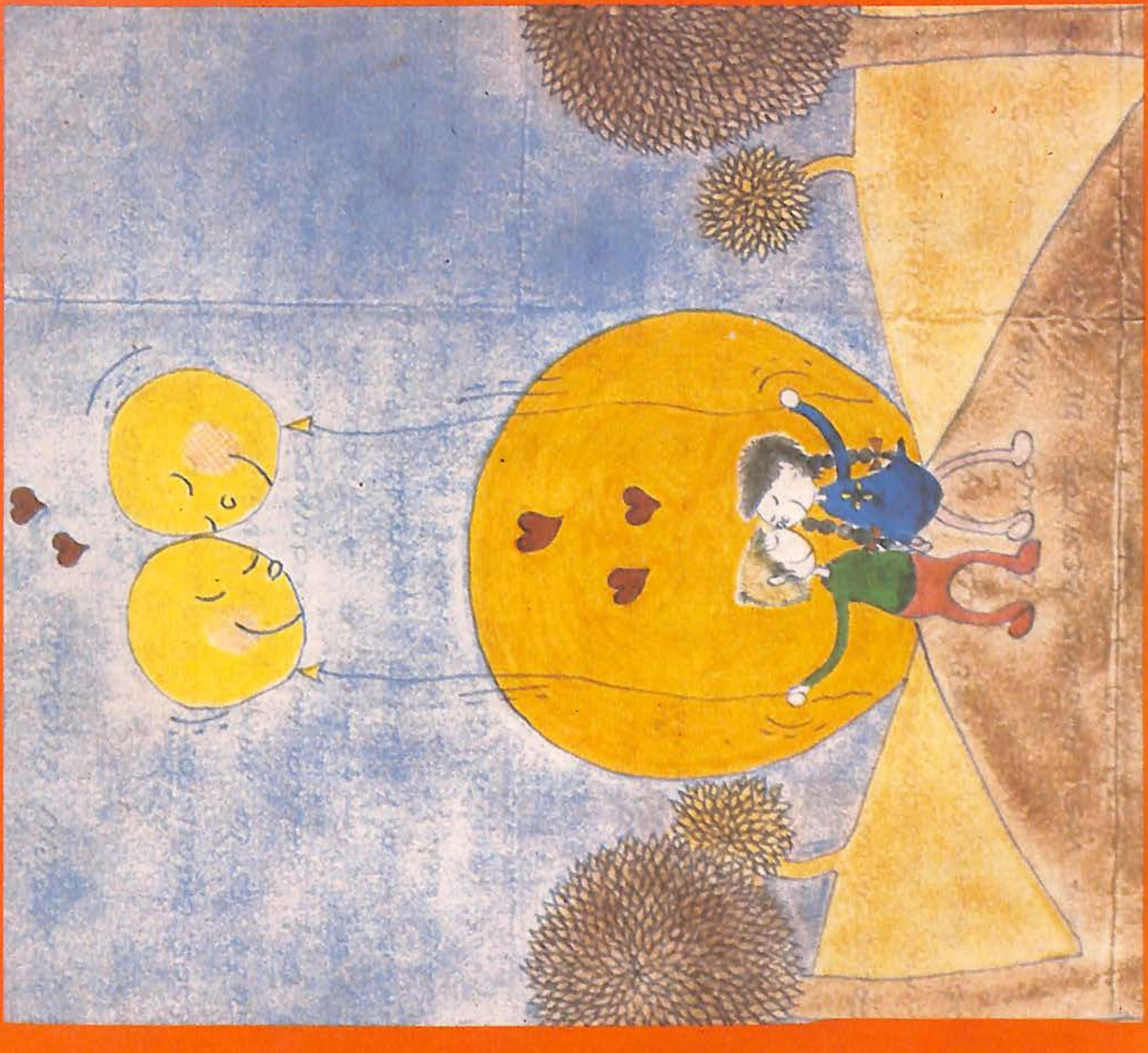

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/87

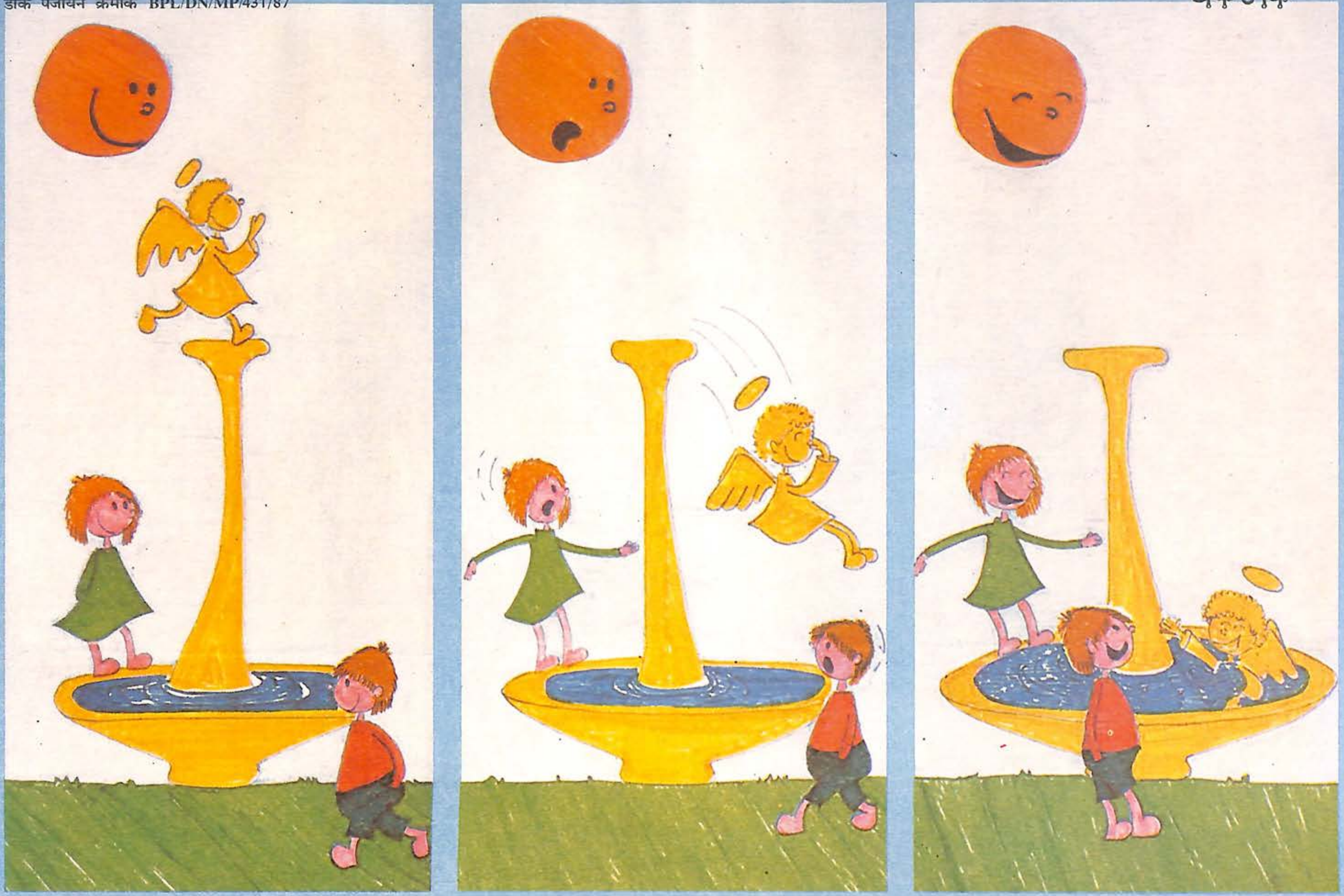

एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित एवं भंडारी आफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित
कागज 'यूनिसेफ' के सौजन्य से